



पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

**CLASS-X
HINDI
PA-3-& Remaining Syllabus
2020-21**

Chapters:

Chp-6-Ab kahaa dusro ke dukh se dukhii

Ch-8-Poem-kar chale hum fidaa jano tan sathiyon

Chp-3-Sanchayan-Topi Shukla

Gr-Samaas

Sandhi

Shudh-Ashudh Vaky Shodhan

गद्य भाग

पाठ-6-अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुखी होनेवाले

(निदा फ़ाजली)

पाठ प्रवेश:-

प्रकृति ने यह धरती उन सभी जीवधारियों के लिए दान में दी थी जिन्हें खुद प्रकृति ने ही जन्म दिया था। लेकिन समय के साथ-साथ हुआ यह कि आदमी नाम के प्रकृति के सबसे अनोखे चमत्कार ने धीरे-धीरे पूरी धरती को अपनी जायदाद बना दिया और अन्य दूसरे सभी जीवधारियों को इधर-उधर भटकने के लिए छोड़ दिया। इसका अन्जाम यह हुआ कि दूसरे जीवधारियों की या तो नस्ल ही खत्म हो गई या उन्हें अपने ठिकानों से कहीं दूसरी जगह जाना पड़ा जहाँ आदमी ना पहुँचा हो। कुछ जीवधारी तो आज भी अपने लिए ठिकानों की तलाश कर रहे हैं।

अगर इतना ही हुआ होता तो भी संतोष किया जा सकता था लेकिन आदमी नाम का यह जीव सब कुछ समेटना चाहता था और उसकी यह भूख इतना सब कुछ करने के बाद भी शांत नहीं हुई। अब वह इतना स्वार्थी हो गया है कि दूसरे प्राणियों को तो पहले ही बेदखल कर चुका था परन्तु अब वह अपनी ही जाति अर्थात् मनुष्यों को ही बेदखल करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता। परिस्थिति यह हो गई है कि न तो उसे किसी के सुख-दुःख की चिंता है और न ही किसी को सहारा या किसी की सहायता करने का इरादा। यदि आपको भरोसा नहीं है तो इस पाठ को पढ़ लीजिए और पाठ को पढ़ते हुए अपने आस पास के लोगों को याद भी कीजिए और ऐसा जरूर होगा कि आपको कोई न कोई ऐसे व्यक्ति याद आयेंगे जिन्होंने किसी न किसी के साथ ऐसा बर्ताव किया होगा।

सार:-

इस पाठ में वर्णन किया गया है कि किस तरह आदमी नाम का जीव सब कुछ समेटना चाहता है और उसकी यह भूख कभी भी शांत होने वाली नहीं है। वह इतना स्वार्थी हो गया है कि दूसरे प्राणियों को तो पहले ही बेदखल कर चुका था परन्तु अब वह अपनी ही जाति अर्थात् मनुष्यों को ही बेदखल करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता। परिस्थिति यह हो गई है कि न तो उसे किसी के सुख-दुःख की चिंता है और न ही किसी को सहारा या किसी की सहायता करने का इरादा।

लेखक कहता है कि बचपन में उनकी माँ हमेशा कहती थी कि शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं। पूजा के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि उस समय फूलों को तोड़ने पर फूल श्राप देते हैं। नदी पर जाओ तो उसे नमस्कार करनी चाहिए वह खुश हो जाती है। कभी भी कबूतरों और मुर्गों को परेशान नहीं करना चाहिए।

ग्वालियर में लेखक का एक मकान था, उस मकान के बरामदे में दो रोशनदान थे। उन रोशनदानों में कबूतर के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा। अब लेखक समय के साथ मनुष्यों की बदलती

भावनाओं के लिए एक उदाहरण देते हैं -दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर आपने घोंसला बना रखा था। उनके बच्चे अभी छोटे थे। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। लेकिन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा दी थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था। अब दोनों कबूतर खिड़की के बाहर रात-भर चुप-चाप और दुखी बैठे रहते थे। मगर अब न तो सोलोमेन है जो उन कबूतरों की भाषा को समझ कर उनका दुःख दूर करे और न ही लेखक की माँ है जो उन कबूतरों के दुःख को देख कर रात भर प्रार्थना करती रहे। अर्थ यह हुआ कि समय के साथ-साथ व्यक्तियों की भावनाओं में बहुत अंतर आ गया है।

अंत में लेखक हमें बताना चाहता है कि हमें नदी और सूरज की तरह दुसरो के हित के कार्य करने चाहिए और तोते की तरह सभी को सामान समझना चाहिए तभी संसार के सभी जीवधारी प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं।

व्याख्या:-

बाइबिल के सोलोमेन जिन्हें कुरआन में सुलेमान कहा गया है, ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह थे। कहा गया है, वह केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, सारे छोटे-बड़े पशु-पक्षी के भी हाकिम थे। वह इन सबकी भाषा भी जानते थे। एक दफा सुलेमान अपने लश्कर के साथ एक रास्ते से गुजर रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनी तो डर कर एक दूसरे से कहा, 'आप जल्दी से अपने-अपने बिलों में चलो, फ़ौज आ रही है।' सुलेमान उनकी बातें सुनकर थोड़ी दूर पर रुक गए और चींटियों से बोले, घबराओ नहीं, सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है। मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ, सबके लिए मुहब्बत हूँ। चींटियों ने उसके लिए ईश्वर से दुआ की और सुलेमान अपनी मंज़िल की ओर बढ़ गए।

ईसाईयों के पवित्र ग्रन्थ बाइबिल में जिसे सोलोमेन कहा जाता है, उन्हीं को इस्लाम के पवित्र ग्रन्थ कुरआन में सुलेमान कहा गया है। सुलेमान ईसा से 1025 वर्ष पहले एक बादशाह थे। उनके बारे में कहा जाता है कि वे केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, बल्कि जितने भी छोटे-बड़े पशु-पक्षी थे वे सभी के राजा या मालिक कहे जाते थे। वह सभी पशु-पक्षियों की भाषा भी जानते थे। एक बार सुलेमान अपनी सेना के साथ एक रास्ते से गुजर रहे थे।

रास्ते में कुछ चींटियों ने जब रास्ते से गुजरते हुए घोड़ों के चलने की आवाज़ सुनी तो वे डर गईं और एक दूसरे से कहने लगी कि जल्दी से सभी अपने-अपने बिलों में चलो, फ़ौज आ रही है। सुलेमान ने उनकी बातें सुन ली और वे थोड़ी दूरी पर रुके और चींटियों से बोले कि तुम में से किसी को भी

घबराने की जरूरत नहीं है, सुलेमान को खुदा ने सबकी रक्षा करने के लिए बनाया है। सुलेमान किसी के लिए भी मुसीबत नहीं है बल्कि वह तो सबसे मुहब्बत अर्थात प्यार करता है। उसकी बातों को सुन कर चींटियों ने उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना की और सुलेमान अपनी मंज़िल की ओर चल पड़ा। ऐसी एक घटना का जिक्र सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी आत्मकथा में किया है। उन्होंने लिखा है - 'एक दिन उनके पिता नहाकर लौटे। माँ ने भोजन परोसा। उन्होंने जैसे ही रोटी का कौर तोड़ा। उनकी नज़र अपनी बाजू पर पड़ी। वहाँ एक काला च्योटा रेंग रहा था। वह भोजन छोड़ कर उठ खड़े हुए। 'माँ ने पूछा, 'क्या बात है? भोजन अच्छा नहीं लगा?' शेख अयाज़ के पिता बोले, 'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।'

(यहाँ लेखक ने शेख अयाज़ के पिता की अच्छाई का वर्णन किया है)

सुलेमान की नेक दिली की तरह एक और उसी तरह की घटना का वर्णन सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी जीवन कथा में किया है। उन्होंने लिखा है कि एक दिन उनके पिता कुँए से नहाकर लौटे। उनकी माँ ने भोजन परोसा। अभी उनके पिता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था कि उनकी नज़र उनके बाजू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक कीड़े पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। उनको खड़ा देख कर शेख अयाज़ की माँ ने पूछा कि क्या बात है? क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख अयाज़ के पिता ने जवाब दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहे हैं।

बाइबिल और दूसरे पावन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का जिक्र मिलता है। उनका असली नाम लश्कर था, लेकिन अरब ने उनको नूह के लक़ब से याद किया है। वह इसलिए कि आप सारी उम्र रोते रहे। इसका कारण एक ज़ख्मी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक ज़ख्मी कुत्ता गुजरा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, 'दूर हो जा गन्दे कुत्ते !' इस्लाम में कुत्तों को गन्दा समझा जाता है। कुत्ते ने उसकी दुत्कार सुन कर जवाब दिया.....'न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इंसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।'

(यहाँ लेखक ने नूह नाम के ईश्वर के सन्देश वाहक का उदाहरण दिया है)

बाइबिल और जितने भी दूसरे पवित्र ग्रन्थ हैं उनमें नूह नाम के एक ईश्वर के सन्देश वाहक का वर्णन मिलता है। उनका असली नाम नूह नहीं था उनका नाम लश्कर था, लेकिन अरब के लोग उनको इस नाम से याद करते हैं क्योंकि वे सारी उम्र रोते रहे। इसका कारण एक जख्मी कुत्ता था। नूह के सामने से एक दिन एक जख्मी कुत्ता गुजर रहा था, उस कुत्ते को देख कर नूह ने उसे अपमानित करते हुए कहा कि गंदे कुत्ते तू दूर हो जा। ऐसा नूह ने इसलिए कहा क्योंकि इस्लाम में कुत्तों को गन्दा समझा जाता है। कुत्ते ने उसकी अपमान जनक बात को सुन कर जवाब दिया कि न तो वह अपनी

मर्जी से कुत्ता बना है और न ही नूह अपनी मर्जी से इंसान बना है। जिसने भी हमें बनाया है वो सबका मालिक तो एक ही है। नूह ने जब उसकी बात सुनी और दुखी हो मुद्दत तक रोते रहे। 'महाभारत' में युधिष्ठिर का जो अंत तक साथ निभाता नज़र आता है, वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था। सब साथ छोड़ते गए तो केवल वही उनके एकांत को शांत कर रहा था। (यहाँ लेखक ने अपने थोड़े शब्दों में अधिक कहने की कला को दर्शाया है)

लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहता है कि उस ईश्वर ने हम सभी प्राणधारियों को एक ही मिट्टी से बनाया है। यदि सभी से प्राण निकल कर वापिस मिट्टी बना दिया जाए तो किसी का कोई निशान नहीं रहेगा जिससे पहचाना जा सके कि कौन सी मिट्टी किस प्राणी की है। भाव यह हुआ की लेखक कहना चाहता है व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व पर घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि यह कोई नहीं जानता की उसमें कितनी मनुष्यता है और कितनी पशुता। नूह ने जब कुत्ते की यह बात सुनी कि जिसने भी हमें बनाया है वो सबका मालिक तो एक ही है। तो वह लम्बे समय तक अपनी मूर्खता पर रोते रहे। उन्हें महाभारत का वह दृश्य याद आ गया जहाँ एक कुत्ता (जो यमराज थे) युधिष्ठिर का अंतिम समय तक साथ निभाता नजर आता है जबकि बाकी सभी पाण्डवों और द्रौपदी ने उनका साथ छोड़ दिया था।

दुनिया कैसे वजूद में आई? पहले क्या थी? किस बिन्दु से इसकी यात्रा शुरू हुई? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रन्थ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारे खड़ी कर दी हैं।

दुनिया कैसे अस्तित्व में आई? पहले यह दुनिया क्या थी? किस बिन्दु से दुनिया के बनने की यात्रा शुरू हुई? इन सभी प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है और सभी जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं वो अपनी-अपनी तरह से देते हैं। इन प्रश्नों के सही उत्तर किसी को पता चले या न चले लेकिन ये बात सही है कि ये धरती किसी एक की नहीं है। जितने भी जीवधारी इस धरती पर रहते हैं जैसे पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर - इन सभी का धरती पर बराबर का अधिकार है। परन्तु ये अलग बात है की अपने आप को बुद्धिमान बताने वाला मनुष्य धरती को अपनी निजि जायदाद समझ कर दूसरों के लिए बड़ी- बड़ी दीवारे खड़ी कर रहा है।

(यहाँ पर लेखक बढ़ती हुई आबादी के कारण होने वाले प्राकृतिक बदलावों का वर्णन किया है लेखक कहता है कि जब पृथ्वी अस्तित्व में आई थी, उस समय पूरा संसार एक परिवार की तरह रहा करता था लेकिन अब इसके टुकड़े हो गए हैं और सभी एक-दूसरे से दूर हो गए हैं। पहले सभी बड़े-बड़े बरामदों और आंगनों में मिल-जुलकर रहा करते थे परन्तु आज के समय में सभी का जीवन छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में सिकुड़ने लगा है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे-वैसे समुद्र अपनी जगह से

पीछे हटने लगा है, लोगों ने पेड़ों को काट कर रास्ते बनाना शुरू कर दिया है। प्रदूषण इतना अधिक फैल रहा है कि उससे परेशान हो कर पंछी बस्तियों को छोड़ कर भाग रहे हैं। बारूद से होने वाली मुसीबतों ने सभी को परेशान कर रखा है। वातावरण में इतना अधिक बदलाव हो गया है कि गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या, ये सब मानव द्वारा प्रकृति के साथ किये गए छेड़-छाड़ का नतीजा है। प्रकृति एक सीमा तक ही सहन कर सकती है। प्रकृति को जब गुस्सा आता है तो क्या होता है इसका एक नमूना कुछ साल पहले मुंबई में आई सुनामी के रूप में देख ही चुके हैं। ये नमूना इतना डरावना था कि मुंबई के निवासी डर कर अपने-अपने देवी-देवताओं से उस मुसीबत से बचाने के लिए प्रार्थना करने लगे थे।

कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल कर उसकी जमीन को हथिया रहे थे। बेचारा समंदर लगातार सिमटता जा रहा था। पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटीं, थोड़ा सिमटकर बैठ गया। फिर जगह कम पड़ी तो उकड़ूं बैठ गया। फिर खड़ा हो गया.... जब खड़े रहने की जगह काम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है। परन्तु आता है तो रोकना मुश्किल हो जाता है, और यही हुआ, उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठा कर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समंदर के किनारे पर आ कर गिरा। दूसरा बांद्रा के कार्टर रोड के सामने आँधे मुँह और तीसरा गेट-वे-ऑफ इंडिया पर टूटफूट कर सैलानियों का नजारा बना बावजूद कोशिश, वे फिर से चलने फिरने के काबिल नहीं हो सके।

(यहाँ लेखक ने प्रकृति के भयानक गुस्से का वर्णन किया है)

कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। बेचारा समुद्र लगातार सिकुड़ता जा रहा था। पहले तो समुद्र ने अपनी फैली हुई टाँगों को इकट्ठा किया और सिकुड़ कर बैठ गया। फिर भी बिल्डर नहीं माने तो समुद्र जगह कम होने के कारण घुटने मोड़ कर बैठ गया। अब भी बिल्डर नहीं माने तो समुद्र खड़ा हो गया..... इतनी जगह देने पर भी जब बिल्डर नहीं माने तो समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता है।

समुद्र के साथ भी वही हुआ - जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाजों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है। एक को वर्ली के समुद्र के किनारे फेंका तो दूसरे को बांद्रा के कार्टर रोड के सामने मुँह के बल गिरा दिया और तीसरे को गेट-वे-ऑफ इंडिया के पास पटक

दिया जो अब घूमने आये लोगों का मनोरंजन का साधन बना हुआ है। समुद्र ने तीनों को इस तरह फेंका की कोशिश करने पर भी उन्हें चलने लायक नहीं बनाया जा सका।

मेरी माँ कहती थी, सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते मत तोड़ो, पेड़ रोएँगे। दिया-बत्ती के वक्त फूलों को मत तोड़ो, फूल बददुआ देते हैं। दरिया पर जाओ तो उसे सलाम किया करो, वह खुश होता है। कबूतरों को मत सताया करो, वो हज़रत मुहम्मद के अज़ीज़ हैं। उन्होंने उन्हें अपनी मज़ार के नीले गुम्बद पर घोंसले बनाने की इज़ाज़त दे रखी है। मुर्गे को परेशान नहीं किया करो, वह मुल्ला जी से पहले मोहल्ले में अज़ान देकर सबको सवेरे जगाता है -

सब की पूजा एक-सी, अलग-अलग है रीत।

(यहाँ लेखक बचपन में दी गई अपनी माँ की सीख का वर्णन कर रहा है)

लेखक कहता है कि बचपन में उनकी माँ हमेशा कहती थी कि जब भी सूरज ढले अर्थात् शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं। दिया-बत्ती के समय अर्थात् पूजा के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि उस समय फूलों को तोड़ने पर फूल श्राप देते हैं। नदी पर जाओ तो उसे नमस्कार करनी चाहिए वह खुश हो जाती है। कभी भी कबूतरों को परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि कबूतर हज़रत मुहम्मद को बहुत प्यारे हैं। हज़रत मुहम्मद ने कबूतरों को अपनी दरगाह के गोलकार शिखर पर रहने की इज़ाज़त दी हुई है। मुर्गों को भी कभी परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि वह मुल्ला जी से पहले ही पूरे मोहल्ले को बांग दे कर जगाता है - सबकी पूजा एक सी अर्थात् चाहे हिंदु हो या मुस्लिम या फिर सीख हो या ईसाई । सभी एक ही ईश्वर का गुणगान करते हैं।केवल तरीका अलग होता है।कोई मंदिर,तो कोई मस्जिद,कोई गिरजा तो कोई गुरुद्वारे जाता है। इसलिए कहा जाता है कि रीत अलग है।उसी प्रकार मौलवी मस्जिद में जाकर लोगों को अलल्ह की इबादत सुनाकर प्रसन्न करता है वैसे ही कोयल बागों में,पेड़ों में बैठकर अपने मधुर बोल से सबको प्रसन्न करती है।

ग्वालियर में हमारा एक मकान था, उस मकान के दालान में दो रोशनदान थे। उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अण्डा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुःख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी से इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुःख देख कर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस गुनाह को खुदा से मुआफ़ कराने के लिए उसने पुरे दिन रोज़ा रखा। दिन भर कुछ खाया पिया नहीं। सिर्फ़ रोती रही और बार बार नमाज़ पढ़-पढ़कर खुदा से इस गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगती रही।

(यहाँ लेखक अपने जीवन की एक घटना का वर्णन कर रहा है)

ग्वालियर में लेखक का एक मकान था, उस मकान के बरामदे में दो रोशनदान थे। उन रोशनदानों में कबूतर के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। एक बार बिल्ली ने उछलकर उस घोंसले के दो अण्डों में से एक अंडे को गिरा दिया जिसके कारण वो अंडा टूट गया। जब लेखक की माँ ने ये सब देखा तो उसे बहुत दुःख हुआ। लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। ये सब देख कर कबूतरों का जोड़ा परेशान हो कर इधर-उधर फड़फड़ाने लगा। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा। उसने पुरे दिन न तो कुछ खाया और न ही कुछ पिया। वह सिर्फ रो रही थी और बार-बार नमाज़ पढ़-पढ़कर खुदा से अपने द्वारा किये गए पाप को माफ़ करने की प्रार्थना कर रही थी।

ग्वालियर से बंबई की दूरी ने संसार को काफी कुछ बदल दिया है। वसोंवा में जहाँ आज मेरा घर है, पहले यहाँ दूर तक जंगल था। पेड़ थे, परिंदे थे और दूसरे जानवर थे। अब यहाँ समंदर के किनारे लम्बी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिन्दों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़ कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा दाल लिया है। इनमें से दो कबूतरों ने मेरे फ्लैट के एक मकान में घोंसला बना लिया है। बच्चे अभी छोटे हैं। उनके खिलाने-पिलाने की जिम्मेवारी अभी बड़े कबूतरों की है। वे दिन में कई-कई बार आते-जाते हैं। और क्यों न आए-जाए उनका भी घर है। लेकिन उनके आने-जाने से हमें परेशानी भी होती है। वे कभी किसी चीज़ को गिराकर तोड़ देते हैं। कभी मेरी लाइब्रेरी में घुस कर कबीर या मिर्जा ग़ालिब को सताने लगते हैं। लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच समय के साथ काफी बदलाव हुए हैं। वसोंवा में जहाँ लेखक का घर है, वहाँ लेखक के अनुसार किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल था। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता। इन में से ही दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर अपना घोंसला बना रखा है। उनके बच्चे अभी छोटे हैं। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। बड़े कबूतर दिन में बहुत बार उन छोटे कबूतरों को खाना खिलाने आते जाते रहते थे। और आए-जाए क्यों न यहाँ उनका भी तो घर था। लेकिन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कभी लेखक की लाइब्रेरी में घुसकर कबीर और मिर्जा ग़ालिब की पुस्तकों को गिरा देते थे।

इस रोज़-रोज़ की परेशानी से तंग आ कर मेरी पत्नी ने उस जगह जहाँ उनका आशियाना था, एक जाली लगा दी है, उनके बच्चों को दूसरी जगह कर दिया है। उनके आने की खिड़की को भी बंद किया जाने लगा है। खिड़की के बाहर अब दोनों कबूतर रात-भर खामोश और उदास बैठे रहते हैं। मगर अब न सोलोमन है जो उनकी जुबान को समझ कर उनका दुःख बाँटे, न मेरी माँ है, जो उनके दुःख में सारी रात नमाजो में काटे -

(यहाँ लेखक समय के साथ आए व्यक्तियों के व्यवहार का वर्णन कर रहा है)

लेखक कहता है कि कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा दी थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था। अब दोनों कबूतर खिड़की के बाहर रात-भर चुप-चाप और दुखी बैठे रहते थे। मगर अब न तो सोलोमन है जो उन कबूतरों की भाषा को समझ कर उनका दुःख दूर करे और न ही लेखक की माँ है जो उन कबूतरों के दुःख को देख कर रात भर प्रार्थना करती रहे। अर्थ यह हुआ कि समय के साथ-साथ व्यक्तियों की भावनाओं में बहुत अंतर आ गया है।

नदिया सींचे खेत को, तोता कुतरे आम।

सूरज ठेकेदार-सा, सबको बाँटे काम।।

इन पंक्तियों के द्वारा लेखक कहना चाहता है कि जिस तरह नदियाँ बिना किसी भेदभाव के सभी खेतों को अपना पानी देती हैं और तोता जिस तरह से किसी भी आम के बगीचे से आम खाने पहुँच जाता है अर्थात् उसे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आम का बगीचा किस जाति के व्यक्ति ने लगाया है। उसी प्रकार सूरज भी बिना किसी भेदभाव के सभी को जागकर काम करने के लिए प्रेरित करता है। उसी तरह हमें भी नदी और सूरज की तरह दूसरों के हित के कार्य करने चाहिए और तोते की तरह सभी को सामान समझना चाहिए तभी संसार के सभी जीवधारी प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) दीजिए -

1- अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं ?

उ- अरब में लशकर को नूह के नाम से इसलिए याद करते हैं क्योंकि वे हमेशा रोते रहते थे अर्थात् दूसरों के दुःख में दुखी रहते थे। नूह को ईश्वर का सन्देश वाहक भी कहा जाता है।

2- लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थी और क्यों ?

उ- लेखक की माँ कहती थी कि जब भी सूरज ढले अर्थात् शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं।

3- प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ ?

उ-प्रकृति में आए असंतुलन का बहुत अधिक भयानक परिणाम हुआ, गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ जन्म ले लेती है और मानव का जीवन बहुत अधिक कठिन हो गया है।

4- लेखक की माँ ने पुरे दिन का रोज़ा क्यों रखा ?

उ-बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। ये सब देख कर कबूतरों का जोड़ा परेशान हो कर इधर-उधर फड़फड़ाने लगा। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा।

5- लेखक ने ग्वालियर से बम्बई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उ-लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच समय के साथ काफी बदलाव हुए हैं। वसोवा में जहाँ लेखक का घर है, वहाँ लेखक के अनुसार किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल था। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर भी अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता।

6-'डेरा ढलने' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उ-'डेरा' अर्थात् अस्थाई घर। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन तोड़ कर चला जाये कोई नहीं जनता। बड़ी-बड़ी इमारतें बन जाने के कारण कई पक्षी बेघर हो गए और जब उन्हें अपना घोंसला बनाने की जगह नहीं मिली तो उन्होंने इन इमारतों में अपना डेरा डाल लिया।

7- शेख अयाज़ के पिता अपनी बाजू पर काला च्योंटा रँगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उ-एक दिन शेख अयाज़ के पिता कुँए से नहाकर लौटे। उनकी माँ ने भोजन परोसा। अभी उनके पिता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था कि उनकी नज़र उनके बाजू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक काले च्योंटे पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। उनको खड़ा देख कर शेख अयाज़ की माँ ने पूछा कि क्या बात है? क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख अयाज़ के पिता ने जवाब दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहे हैं।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) दीजिए -

1- बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ-जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे-वैसे समुद्र अपनी जगह से पीछे हटने लगा है, लोगों ने पेड़ों को काट कर रास्ते बनाना शुरू कर दिया है। प्रदुषण इतना अधिक फैल रहा है कि उससे परेशान हो कर पंछी बस्तियों को छोड़ कर भाग रहे हैं। बारूद से होने वाली मुसीबतों ने सभी को परेशान कर रखा है। वातावरण में इतना अधिक बदलाव हो गया है कि गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या, ये सब मानव द्वारा किये गए प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का नतीजा है। इन सभी के कारण मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। मानव के जीवन पर इसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है।

2- लेखक की पत्नी को खिड़की पर जाली क्यों लगानी पड़ी ?

उ-दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर अपना घोंसला बना रखा है। उनके बच्चे अभी छोटे हैं। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। बड़े कबूतर दिन में बहुत बार उन छोटे कबूतरों को खाना खिलाने आते जाते रहते थे। लेकिन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था।

3- समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी ? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला ?

उ- कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। बेचारा समुद्र लगातार सिकुड़ता जा रहा था। पहले तो समुद्र ने अपनी फैली हुई टांगों को इकट्ठा किया और सिकुड़ कर बैठ गया। फिर जगह कम होने के कारण घुटने मोड़ कर बैठ गया। अब भी बिल्डर नहीं माने तो समुद्र खड़ा हो गया.... जब समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है। एक को वर्ली के समुद्र के किनारे फेंका तो दूसरे को बांद्रा के कार्टर रोड के सामने मुँह के बल गिरा दिया और तीसरे को गेट-वे-ऑफ इंडिया के पास पटक दिया जो अब घूमने आये लोगों का मनोरंजन का साधन बना हुआ है। समुद्र ने तीनों को इस तरह फेंका की कोशिश करने पर भी उन्हें चलने लायक नहीं बनाया जा सका।

4--मिट्टी से मिट्टी मिले,

खो के सभी निशान।

किसमें कितना कौन है,

कैसे हो पहचान।। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ?स्पष्ट कीजिए।

उ-लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहता है कि उस ईश्वर ने हम सभी प्राणधारियों को एक ही मिट्टी से बनाया है। यदि सभी से प्राण निकाल कर वापिस मिट्टी बना दिया जाए तो किसी का कोई निशान नहीं रहेगा जिससे पहचाना जा सके कि कौन सी मिट्टी किस प्राणी की है। भाव यह हुआ की लेखक कहना चाहता है व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व पर घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि यह कोई नहीं जानता की उसमें कितनी मनुष्यता है और कितनी पशुता।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए -

1-नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई (मुंबई) में देखने को मिला था।

उ- प्रकृति एक सीमा तक ही सहन कर सकती है। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। प्रकृति को भी जब गुस्सा आता है तो क्या होता है इसका एक नमूना कुछ साल पहले मुंबई में आई सुनामी के रूप में देख ही चुके हैं। ये नमूना इतना डरावना था कि मुंबई के निवासी डर कर अपने-अपने देवी-देवताओं से उस मुसीबत से बचाने के लिए प्रार्थना करने लगे थे।

2- जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है।

उ-कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। जब समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है।

3- इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिन्दों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़ कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा दाल लिया है।

उ-लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल थे। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर भी अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता।

4- शेख अयाज़ के पिता बोले,'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में छिपी हुई उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

उ-शेख अयाज़ के पिता बोले,'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में शेख अयाज़ के पिता की छिपी हुई भावना यह थी कि वे पशु-पक्षियों की भावना को समझते थे। वे अपना खाना छोड़ कर केवल एक काले च्योंटे को उसके घर कुँए पर छोड़ने चल पड़े। उनका व्यक्तित्व ऐसा था जो किसी को भी तकलीफ नहीं देना चाहते थे।

पद्य भाग
पाठकर-8- चले हम फ़िदा
(कैफ़ी आजमी)

प्रवेश :-प्रस्तुत कविता में देश के सैनिकों की भावनाओं का वर्णन है। सैनिक कभी भी देश के मानसम्मान को बचाने से पीछे नहीं हटेगा। फिर चाहे उसे अपनी जान से ही हाथ क्यों ना गवाना पड़े। भारत - चीन युद्ध के दौरान सैनिकों को गोलियाँ लगने के कारण उनकी साँसें रुकने वाली थी ,ठण्ड के कारण उनकी नाड़ियों में खून जम रहा था परन्तु उन्होंने किसी चीज़ की परवाह न करते हुए दुश्मनों का बहदुरी से मुकाबला किया और दुश्मनों को आगे नहीं बढ़ने दिया। सैनिक गर्व से कहते हैं कि हमें अपने सर भी कटवाने पड़े तो हम खुशी खुशी कटवा देंगे पर हमारे गौरव के प्रतिक हिमालय को नहीं झुकने देंगे अर्थात हिमालय पर दुश्मनों के कदम नहीं पड़ने देंगे। लेकिन देश के लिए प्राण न्योछावर करने की खुशी कभी कभी किसी किसी को ही मिल पाती है अर्थात सैनिक देश पर मर मिटने का एक भी मौका नई खोना चाहते। जिस तरह से दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है उसी तरह सैनिकों ने भी अपने प्राणों का बलिदान दे कर धरती को खून से लाल कर दिया है सैनिक कहते हैं कि हम तो देश के लिए बलिदान दे रहे हैं परन्तु हमारे बाद भी ये सिलसिला चलते रहना चाहिए। जब भी जरूरत हो तो इसी तरह देश की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आना चाहिए। सैनिक अपने देश की धरती को सीता के आँचल की तरह मानते हैं और कहते हैं कि अगर कोई हाथ आँचल को छूने के लिए आगे बढ़े तो उसे तोड़ दो। अपने वतन की रक्षा के लिए तुम ही राम हो और तुम ही लक्ष्मण हो अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर है।

पाठ व्याख्या

कर चले हम फ़िदा जानोतन साथियो-
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरतेमरते रहा बाँकपन साथियो-
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि कैफ़ी आज़मी हैं। इन पंक्तियों में कवि एक वीर सैनिक का अपने देशवासियों को दिए आखिरी सन्देश का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि सैनिक अपने आखिरी सन्देश में कह रहे हैं कि वो अपने प्राणों को देश हित के लिए न्योछावर कर रहे हैं, अब यह देश हम जाते जाते आप देशवासियों को सौंप रहे हैं। सैनिक उस दृश्य का वर्णन कर रहे हैं जब दुश्मनों ने देश पर हमला किया था। सैनिक कहते हैं कि जब हमारी साँसे हमारा साथ नहीं दे रही थी और हमारी नाड़ियों में खून जमता जा रहा, फिर भी हमने अपने बढ़ते कदमों को जारी रखा अर्थात् दुश्मनों को पीछे धकेलते गए। सैनिक गर्व से कहते हैं कि हमें अपने सर भी कटवाने पड़े तो हम खुशी खुशी कटवा देंगे पर हमारे गौरव के प्रतिक हिमालय को नहीं झुकने देंगे अर्थात् हिमालय पर दुश्मनों के कदम नहीं पड़ने देंगे। हम मरते दम तक वीरता के साथ दुश्मनों का मुकाबला करते रहे अब इस देश की रक्षा का भार आप देशवासियों को सौंप रहे हैं।

जिंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रूत रोज आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुलहन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि कैफ़ी आज़मी हैं। इन पंक्तियों में कवि सैनिक के बलिदान का भावनात्मक रूप से वर्णन कर रहा।

व्याख्या - सैनिक कहते हैं कि हमारे पूरे जीवन में हमें जिन्दा रहने के कई अवसर मिलते हैं लेकिन देश के लिए प्राण न्योछावर करने की खुशी कभी कभी किसी किसी को ही मिल पाती है अर्थात् सैनिक देश पर मर मिटने का एक भी मौका नई खोना चाहते। सैनिक देश के नौजवानों को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि सुंदरता और प्रेम का त्याग करना सीखो क्योंकि वो सुंदरता और प्रेम ही क्या, जवानी ही क्या जो देश के लिए अपना खून न बहा सके। सैनिक देश की धरती को दुल्हन की तरह मानते हैं

और कहते हैं कि जिस तरह दुल्हन को स्वयंवर में हासिल करने के लिए राजा किसी भी मुश्किल को पार कर जाते थे उसी तरह तुम भी अपनी इस दुल्हन को दुश्मनों से बचा कर रखना। क्योंकि अब हम देश की रक्षा का दायित्व आप देशवासियों पर छोड़ कर जा रहे हैं।

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फतह का जश्न इस जश्न के बाद है
जिंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि कैफ़ी आज़मी हैं। इन पंक्तियों में सैनिक देशवासियों को देश के लिए बलिदान करने के लिए तैयार रहने को कहते हैं।

व्याख्या - सैनिक कहते हैं कि हम तो देश के लिए बलिदान दे रहे हैं परन्तु हमारे बाद भी ये सिलसिला चलते रहना चाहिए। जब भी जरूरत हो तो इसी तरह देश की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आना चाहिए। जीत की खुशी तो देश पर प्राण न्योछावर करने की खुशी के बाद दोगुनी हो जाती है। उस स्थिति में ऐसा लगता है मनो जिंदगी मौत से गले मिल रही हो। अब ये देश आप देशवासियों को सौंप रहे हैं अब आप अपने सर पर मौत की चुनरी बांध लो अर्थात अब आप देश की रक्षा के लिए तैयार हो जाओ।

खींच दो अपने खूँ से जमीं पर लकीर
इस तरफ आने पाए न रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि कैफ़ी आज़मी हैं। इन पंक्तियों में सैनिक देशवासियों को प्रेरित कर रहे हैं।

व्याख्या - सैनिक कहते हैं कि अपने खून से लक्ष्मण रेखा के समान एक रेखा तुम भी खींच लो और ये तय कर लो कि उस रेखा को पार करके कोई रावण रूपी दुश्मन इस पार ना आ पाय। सैनिक अपने देश की धरती को सीता के आँचल की तरह मानते हैं और कहते हैं कि अगर कोई हाथ आँचल को छूने के लिए आगे बढ़े तो उसे तोड़ दो। अपने वतन की रक्षा के लिए तुम ही राम हो और तुम ही लक्ष्मण हो। अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर है।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1-क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है ?

उ- यह गीत सन् 1962 के भारत चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से युद्ध किया और भारतीय वीरों ने इसका बहदुरी से सामना किया।

2-‘सर हिमालय का हमने न झुकने दिया’, इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतिक है ?

उ- हिमालय भारत के मानसम्मान का प्रतिक है। देश के वीर जवानों ने अपने प्राणों का बलिदान दे कर भी देश के मान सम्मान की रक्षा की।

3- इस गीत में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है?

उ-गीत में धरती को दुलहन इसलिए कहा गया है, क्योंकि सन् 1962 के युद्ध में भारतीय सैनिकों के बलिदानों से, उनके रक्त से धरती लाल हो गई थी, मानो धरती ने किसी दुलहन की भाँति लाल पोशाक पहन ली हो अर्थात् भारतीय सैनिकों के रक्त से पूरी युद्धभूमि लाल हो गई थी।

4- गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि वे जीवन भर याद रह जाते हैं?

उ- जीवन भर याद रह जाने वाले गीतों में हृदय का स्पर्श करने वाली भाषा और संगीत का अद्भुत तालमेल होता है। जो व्यक्ति के अंतर्मन में स्वतः ही प्रवेश कर जाता है। इस तरह गीतों के बोल सरल भाषा व प्रभावोत्पादक शैली में होने चाहिए ताकि वह व्यक्ति की जुबान पर आसानी से चढ़ सके। इन गीतों का विषय जीवन के मर्मस्पर्शी पहलुओं से जुड़ा होना चाहिए। ऐसे गीत हृदय की गहराइयों में समा जाते हैं और इन गीतों के सुर, लहरियाँ संपूर्ण मन मस्तिष्क को सकारात्मकता से ओत-प्रोत कर देती हैं और गीत जीवनभर याद रह जाते हैं।

5- कवि ने ‘साथियों’ संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

उ-कवि ने ‘साथियों’ संबोधन का प्रयोग देशवासियों के लिए किया है, जो देश की एकता को दर्शा रहा है। देशवासियों का संगठन ही देश को प्रगतिशील, विकासशील तथा समृद्धशाली बनाता है। देशवासियों का परस्पर साथ ही देश की ‘अनेकता में एकता’ जैसी विशिष्टता को मजबूत बनाता है।

6- कवि ने इस कविता में किस काफिले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

उ-‘काफिले’ शब्द का अर्थ है-यात्रियों का समूह। कवि ने इस कविता में देश के लिए न्योछावर होने वाले अर्थात् देश के मान-सम्मान व रक्षा की खातिर अपने सुखों को त्याग कर, मर मिटने वाले बलिदानियों के काफिले को आगे बढ़ते रहने की बात कही है। कवि का मानना है कि बलिदान का यह क्रम निरंतर चलते रहना चाहिए क्योंकि हमारा देश तभी सुरक्षित रह सकता है, जब बलिदानियों के काफिले शत्रुओं को परास्त कर तथा विजयश्री को हासिल कर आगे बढ़ते रहेंगे।

7- इस गीत में ‘सर पर कफ़न बाँधना’ किस ओर संकेत करता है?

उ-इस गीत में ‘सर पर कफ़न बाँधना’ देश के लिए अपना सर्वस्व अर्थात् संपूर्ण समर्पण की ओर संकेत करता है। सर पर कफ़न बाँधकर चलने वाला व्यक्ति अपने प्राणों से मोह नहीं करता, बल्कि अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए सदैव तैयार रहता है इसलिए हर सैनिक सदा मौत को गले लगाने के लिए तत्पर रहता है।

8- इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उ-प्रस्तुत कविता उर्दू के प्रसिद्ध कवि कैफ़ी आजमी द्वारा रचित है। यह गीत युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित फिल्म हकीकत के लिए लिखा गया है। इस कविता में कवि ने उन सैनिकों के हृदय की आवाज़ को व्यक्त किया है, जिन्हें अपने देश के प्रति किए गए हर कार्य, हर कदम, हर बलिदान पर गर्व है। इसलिए इन्हें प्रत्येक देशवासी से कुछ अपेक्षाएँ हैं कि उनके इस संसार से विदा होने के पश्चात् वे देश की आन, बान व शान पर आँच नहीं आने देंगे, बल्कि समय आने पर अपना बलिदान देकर देश की रक्षा करेंगे।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1-साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उ- भाव-इन पंक्तियों का भाव यह है कि हमारे वीर सैनिक देश रक्षा के लिए दिए गए अपने वचन का पालन अपने जीवन के अंतिम क्षण तक करते रहे युद्ध में घायल इन सैनिकों को अपने प्राणों की जरा भी परवाह नहीं की। उनकी साँसें भले ही रुकने लगीं तथा भयंकर सर्दी के कारण उनकी नब्ज़ चाहे जमती चली गई किंतु किसी भी परिस्थिति में उनके इरादे डगमगाए नहीं। भारत माँ की रक्षा के लिए उनके बढ़ते कदम न तो पीछे हटे और न ही रुके। वे अपनी अंतिम साँस तक शत्रुओं का मुकाबला करते रहे।

2-खींच दो अपने खू से जमीं पर लकीर

इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई

उ-इन अंशों का भाव है कि सैनिकों ने अंतिम साँस तक देश की रक्षा की। युद्ध में घायल हो जाने पर जब सैनिकों की साँसें रुकने लगती हैं अर्थात् अंतिम समय आने पर तथा नब्ज़ के रुक-रुककर चलने पर, कमज़ोर पड़ जाने पर भी उनके कदम नहीं रुकते, क्योंकि वे भारतमाता की रक्षा हेतु आगे बढ़ते रहते हैं और हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं।

3-छू न पाए सीता का दामन कोई

राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो

उ-भाव इन पंक्तियों का भाव यह है कि भारत की भूमि सीता माता की तरह पवित्र है। इसके दामन को- छूने का दुस्साहस किसी को नहीं होना चाहिए। यह धरती राम और लक्ष्मण जैसे अलौकिक वीरों की धरती है जिनके रहते सीमा पर से कोई शत्रु रूपी रावण देश में प्रवेश कर देश की अस्मिता को लूट नहीं सकता। अतः हम सभी देशवासियों को मिलकर देश की गरिमा को बनाए रखना है अर्थात् देश के मानसम्मान व उसकी पवित्रता की - रक्षा करना है।

संचयन-भाग पाठ-3-टोपी शुक्ला

शुक्ल टोपी :-

प्रस्तुत पाठ में लेखक टोपी की कहानी पाठकों को सुनाना चाहते हैं। इसलिए लेखक कहता है कि वह इफ़फ़न की कहानी पूरी नहीं सुनाएगा बल्कि केवल उतनी ही सुनाएगा जितनी टोपी की कहानी के लिए उसे जरूरी लग रही है। इफ़फ़न टोपी की कहानी का एक ऐसा हिस्सा है जिसके बिना शायद टोपी की कहानी अधूरी है। ये दोनों लेखक की कहानी के दो चरित्र हैं। एक का नाम बलभद्र नारायण शुक्ला है और दूसरे का नाम सय्यद जरगाम मुरतुज़ा। एक को सभी प्यार से टोपी कह कर पुकारते हैं और दूसरे को इफ़फ़न। इफ़फ़न की दादी पूरब की रहने वाली थी। नौ या दस साल की थी जब उनकी शादी हुई और वह लखनऊ आ गई, परन्तु जब तक जिंदा रही, वह पूरब की ही भाषा बोलती रही। लखनऊ की उर्दू तो उनके लिए ससुराल की भाषा थी। उन्होंने तो मायके की भाषा को ही गले लगाए रखा था क्योंकि उनकी इस भाषा के सिवा उनके आसपास कोई ऐसा नहीं था जो उनके दिल की बात समझ पाता। जब उनके बेटे की शादी के दिन आए तो गाने बाजाने के लिए उनका दिल तड़पने लगा, परन्तु इस्लाम के आचार्यों के घर गाना -बजाना भला कैसे हो सकता था? बेचारी का दिल उदास हो गया। लेकिन इफ़फ़न के जन्म के छठे दिन के स्नानउत्सव पर उन्होंने जी भरकर उत्सव मना लिया /पूजन/ था। इफ़फ़न को अपनी दादी से बहुत ज्यादा प्यार था। प्यार तो उसे अपने अब्बू, अम्मी, बड़ी बहन और छोटी बहन नुज़हत से भी था परन्तु दादी से वह सबसे ज्यादा प्यार किया करता था। अम्मी तो कभी-कभार इफ़फ़न को डाँटदेती थी और कभीकभी तो मार भी दिया करती थी। बड़ी बहन भी अम्मी की -कभी डाँटती और मारती थी। अब्बू भी-ही तरह कभीकभीकभार घर को न्यायालय समझकर अपना -फैसला सुनाने लगते थे। नुज़हत को जब भी मौका मिलता वह उसकी कापियों पर तस्वीरें बनाने लगती थी। बस एक दादी ही थी जिन्होंने कभी भी किसी बात पर उसका दिल नहीं दुखाया था। वह रात को भी उसे बहराम डाकू, अनार परी, बारह बुर्ज, अमीर हमज़ा, गुलबकावली, हातिमताई, पंच फुल्ला रानी की कहानियाँ सुनाया करती थी।

इफ़फ़न की दादी की बोली टोपी के दिल में उतर गई थी, उसे भी इफ़फ़न की दादी की बोली बहुत अच्छी लगती थी। इफ़फ़न की दादी टोपी को अपनी माँ की पार्टी की दिखाई दी कहने का अर्थ है टोपी की माँ और इफ़फ़न की दादी की बोली एक जैसी थी। टोपी को अपनी दादी बिलकुल भी पसंद नहीं थी। उसे तो अपनी दादी से नफ़रत थी। वह पता नहीं कैसी भाषा बोलती थी। टोपी को अपनी दादी की भाषा और इफ़फ़न के अब्बू की भाषा एक जैसी लगती थी। लेखक कहता है कि टोपी जब भी इफ़फ़न के घर जाता था तो उसकी दादी के ही पास बैठने की कोशिश करता था। टोपी को इफ़फ़न की दादी का

हर एक शब्द शक्कर की तरह मिठठा लगता था। पके आम के रस को सूखाकर बनाई गई मोटी परत की तरह मजेदार लगता। तिल के बने व्यंजनों की तरह अच्छा लगता था।

लेखक कहता है कि टोपी ने दस अक्टूबर सन पैंतालीस को कसम खाई कि अब वह किसी भी ऐसे लड़के से कभी भी दोस्ती नहीं करेगा जिसके पिता कोई ऐसी नौकरी करते हो जिसमें बदली होती रहती हो। दस अक्टूबर सन पैंतालीस का टोपी के जीवन के इतिहास में बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि इस तारीख को इफ़न के पिता बदली पर मुरादाबाद चले गए। टोपी दादी के मरने के बाद तो अकेला महसूस कर ही रहा था और अब इफ़न के चले जाने पर वह और भी अकेला हो गया था क्योंकि दूसरे कलेक्टर ठाकुर हरिनाम सिंह के तीन लड़कों में से कोई उसका दोस्त नहीं बन सका था। डब्बू बहुत छोटा था। बीलू बहुत बड़ा था। गुड्डू था तो बराबर का परन्तु केवल अंग्रेजी बोलता था। अब न तो इफ़न था और न ही इफ़न की दादी जो उसे समझ सके। घर में ले देकार एक बूढ़ी नौकरानी-सीता थी जो उसका दुःखदर्द समझती थी। तो वह अब सीता के साथ ही समय गुजारने लगा।-

टोपी के सभी दोस्त दसवीं कक्षा में थे। इसलिए वह उन्हीं से मिलता और उन्हीं के साथ खेलता था। अपने साथ नवीं कक्षा में पढ़ने वालों में से किसी के साथ उसकी दोस्ती नहीं थी। वह जब भी कक्षा में बैठता, उसे अजीब लगता था। टोपी ने किसी न किसी तरह इस साल को झेल लिया। परन्तु जब सन इक्यावन में भी उसे नवीं कक्षा में ही बैठना पड़ा तो वह बिलकुल गीली मिट्टी का पिंड हो गया, क्योंकि अब तो दसवें में भी कोई उसका दोस्त नहीं रह गया था। जो विद्यार्थी सन उनचास में आठवीं कक्षा में थे वे अब दसवीं कक्षा में थे। जो सन उनचास में सातवीं कक्षा में थे वे टोपी के साथ पहुँच गए थे। उन सभी के बीच में वह अच्छा खासा बूढ़ा दिखाई देने लगा था।-वहीद जो कक्षा का सबसे तेज़ लड़का था, उसने टोपी से पूछा कि वह उन लोगों के साथ क्यों खेलता है। उसे तो आठवीं कक्षा वालों से दोस्ती करनी चाहिए। क्योंकि वे लोग तो आगे दसवीं कक्षा में चले जाएँगे और टोपी को तो आठवीं वालों के साथ ही रहना है तो उनसे दोस्ती करना टोपी के लिए अच्छा होगा। यह बात टोपी को बहुत बुरी लगी और ऐसा लगा जैसे यह बात उसके दिल के आरपार हो गई हो। और उसने उसी - समय कसम खाई कि इस साल उसे टाइफ़ाइड हो या टाइफ़ाइड का बाप, वह पास होकर ही दिखाएगा। परन्तु साल के बीच में ही चुनाव आ गए। टोपी के पिता डॉक्टर भृगु नारायण, नीले तेल वाले, चुनाव लड़ने के लिए खड़े हो गए। अब जिस घर में कोई चुनाव के लिए खड़ा हो, उस घर में कोई पढ़लिख कैसे सकता है-? वह तो जब टोपी के पिता चुनाव हार गए तब घर में थोड़ी शांति हुई और टोपी ने देखा कि उसकी परीक्षा को ज्यादा समय नहीं रहा है। वह पढ़ाई में जुट गया। परन्तु जैसा वातावरण टोपी के घर में बना हुआ था ऐसे वातावरण में कोई कैसे पढ़ सकता था? इसलिए टोपी का पास हो जाना ही बहुत था। टोपी के दो साल एक ही कक्षा में रहने के बाद जब वह पास हुआ तो उसकी दादी बोली कि वाहबंद से बचाए। बहुत अच्छी रफ़्तार पकड़ी है। -टोपी को भगवान नजरे ! तीसरे साल पास हुआ वो भी तीसरी श्रेणी में, चलो पास तो हो गया।

लेखक कहता है कि सीता टोपी को इसलिए समझा रही थी क्योंकि बात यह हुई कि ठण्ड के दिन थे और मुन्नी बाबू के लिए कोट का नया कपड़ा आया और भैरव के लिए भी नया कोट बना लेकिन टोपी को मुन्नी बाबू का पुराना कोट मिला। वैसे कोट बिलकुल नया ही था क्योंकि जब वह बनाया गया तब वह मुन्नी बाबू को पसंद नहीं आया था। फिर भी बना तो उन्हीं के लिए था। भले ही वह उसे ना पहनते हो। टोपी ने वह कोट उसी वक्त दूसरी नौकरानी केतकी के बेटे को दे दिया। वह खुश हो गया। नौकरानी के बच्चे को दे दी गई कोई भी चीज़ वापिस तो ली नहीं जा सकती थी, इसलिए तय हुआ कि टोपी ठण्ड ही खाएगा। टोपी छोटा था इसलिए ठण्ड खाने का अर्थ समझा नहीं और भोलेपन से बोला कि वह कोई ठण्ड नहीं खाएगा। वह तो भात खाएगा। इस पर टोपी की दादी सुभद्रादेवी बोली कि वह तो जूते खाएगा। टोपी उनकी इस बात पर झट से बोल पड़ा कि क्या उन्हें इतना भी नहीं पता कि जूता खाया नहीं जाता बल्कि पहना जाता है। टोपी के इस तरह बोलने पर मुन्नी बाबू गुस्से से टोपी को डाँटते हुए बोले कि वह दादी का अपमान क्यों कर रहा है? इस पर भी टोपी उल्टा जवाब देता हुआ बोला कि तो क्या वह उनकी पूजा करे? यह सुनते ही दादी ने बहुत अधिक शोर मचाना शुरू कर दिया और टोपी की माँ रामदुलारी ने टोपी को पीटना शुरू कर दिया। "तूँ दसवाँ में पहुँच गइल बाड़।" सीता ने कहा, "तूँ हँ दादी से टर्वाव के त ना न चाही। कीनों ऊ तोहार दादी बाड़िन।"

सीता ने तो बड़ी आसानी से कह दिया कि वह दसवें में पहुँच गया है, परन्तु यह बात इतनी आसान नहीं थी। दसवें में पहुँचाने के लिए उसे बड़े पापड़ बेलने पड़े। दो साल तो वह फेल ही हुआ। नवें में तो वह सन उनचास ही में पहुँच गया था, परन्तु दसवें में वह सन बावन में पहुँच सका।

जब वह पहली बार फेल हुआ मुन्नी बाबू इन्टरमीडिएट में फ़र्स्ट आए और भैरव छठे में। सारे घर ने उसे ज़बान की नोक पर रख लिया। वह बहुत रोया। बात यह नहीं थी कि वह गाउदी था। वह काफ़ी तेज़ था परन्तु उसे कोई पढ़ने ही नहीं देता था। जब भी वह पढ़ने बैठता मुन्नी बाबू को कोई काम निकल आता या रामदुलारी को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती जो नौकरों से नहीं मँगवाई जा सकती थी-यह सब कुछ न होता तो पता चलता कि भैरव ने उसकी कापियों के हवाई जहाज़ उड़ा डाले हैं।

दूसरे साल उसे टाइफ़ाइड हो गया। तीसरे साल वह थर्ड डिवीज़न में पास हो गया। यह थर्ड डिवीज़न कलंक के टिके की तरह उसके माथे से चिपक गया। जब टोपी को उसकी माँ ने दादी को उल्टा जवाब देने के लिए पीटा तो उनकी बूढ़ी नौकरानी सीता टोपी को समझाने लगी कि अब वह दसवीं कक्षा में पहुँच गया है। उसे दादी से इस तरह बात नहीं करनी चाहिए आखिरकार वह उसकी दादी है। सीता ने तो बड़ी आसानी से कह दिया कि टोपी दसवीं कक्षा में पहुँच गया है परन्तु टोपी के लिए दसवीं कक्षा में पहुँचना इतना भी आसान नहीं था। दसवीं कक्षा में पहुँचने के लिए टोपी को बहुत अधिक मेहनत करनी पड़ी थी। दो साल तो टोपी फेल ही हुआ था। नवीं कक्षा में तो टोपी सन उनचास ही में पहुँच गया था, परन्तु दसवीं कक्षा में पहुँचते-पहुँचते साल बावन हो चूका था। जब टोपी पहली बार फेल हुआ

तो उसका बड़ा भाई मुन्नी बाबू माध्यमिक (10th) कक्षा में प्रथम आया और उसका छोटा भाई भैरव छठी कक्षा में प्रथम आया। सभी घरवाले हर समय टोपी की ही बात करने लगे। उस समय टोपी बहुत रोया था। ऐसी बात नहीं थी कि वह मुख या मन्दबुद्धि था। वह पढ़ाई में बहुत तेज़ था परन्तु उसे कोई पढ़ने ही नहीं देता था। जब भी टोपी पढ़ाई करने बैठता था तो कभी उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू को कोई काम याद आ जाता था या उसकी माँ को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती जो नौकरों से नहीं मँगवाई जा सकती थी, अगर ये सारी चीज़ें न होती तो कभी उसका छोटा भाई भैरव उसकी कापियों के पन्नों को फाड़ कर उनके हवाई जहाज़ बना कर उड़ाने लग जाता। यह तो थी पहले साल की बात। दूसरे साल उसे टाइफ़ाइड हो गया था। जिसके कारण वह पढ़ाई नहीं कर पाया और दूसरी साल भी फेल हो गया। तीसरे साल वह पास तो हो गया परन्तु थर्ड डिवीज़न में। यह थर्ड डिवीज़न कलंक के टिके की तरह उसके माथे से चिपक गया। परन्तु लेखक कहता है कि सभी को उसकी मुश्किलों को भी ध्यान में रखना चाहिए कि वह किस वजह से दो साल में फेल हुआ और तीसरी साल में थर्ड डिवीज़न से पास हुआ।

लेखक कहता है कि सन उनचास में टोपी अपने साथियों के साथ था। जब वह फेल हो गया तो उसके सभी साथी आगे निकल गए और वह नवीं कक्षा में ही रह गया। सन पचास में उसे उसी कक्षा में उन लड़कों के साथ बैठना पड़ा जो पिछले साल आठवीं कक्षा में थे। पिछली कक्षा वालों के साथ एक ही कक्षा में बैठना कोई आसान काम नहीं होता। टोपी के सभी दोस्त दसवीं कक्षा में थे। इसलिए वह उन्हीं से मिलता और उन्हीं के साथ खेलता था। अपने साथ नवीं कक्षा में पढ़ने वालों में से किसी के साथ उसकी दोस्ती नहीं हो सकी थी। वह जब भी कक्षा में बैठता, उसे अपना उस कक्षा में बैठना अजीब लगता था। उस पर जुल्म यह हुआ कि कक्षा के कमज़ोर लड़कों को जब मास्टर जी समझाते तो उस का उदाहरण देते हुए

कहते कि साम अवतार (या मुहम्मद अली), बलभद्र की तरह इसी कक्षा में टिके रहना चाहते हो क्या? यह सुन कर सारी कक्षा हँसने लगती। हँसने वाले वे विद्यार्थी होते थे जो पिछले साल आठवीं कक्षा में थे। टोपी ने किसी न किसी तरह इस साल को झेल लिया। परन्तु जब सन इक्यावन में भी उसे नवीं कक्षा में ही बैठना पड़ा तो उसे बहुत अधिक शर्म महसूस होने लगी, क्योंकि अब तो दसवें में भी कोई उसका दोस्त नहीं रह गया था। जो विद्यार्थी सन उनचास में आठवीं कक्षा में थे वे अब दसवीं कक्षा में थे। जो सन उनचास में सातवीं कक्षा में थे वे टोपी के साथ पहुँच गए थे। उन सभी के बीच में वह अच्छा-खासा बूढ़ा दिखाई देने लगा था।

वह अपने भरे-पूरे घर की ही तरह अपने स्कूल में भी अकेला हो गया था। मास्टरों ने उसका नोटिस लेना बिलकुल ही छोड़ दिया था कोई सवाल किया जाता और जवाब देने के लिए वह भी हाथ उठता तो कोई मास्टर उससे जवाब न पूछता। परन्तु जब उसका हाथ उठता ही रहा तो एक दिन अंग्रेजी-साहित्य के मास्टर साहब ने कहा -

"तीन बरस से यही किताब पढ़ रहे हो, तुम्हें तो सारे जवाब जुबानी याद हो गए होंगे! इन लड़कों को अगले साल हाई स्कूल का इम्तिहान देना है। तुमसे पारसाल पूछ लूँगा।"

टोपी इतना शर्माया कि उसके काले रंग लाली दौड़ गई। और जब तमाम बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े तो वह बिलकुल मर गया। जब वह पहली बार नवें में आया था तो वह भी इन्हीं बच्चों की तरह बिलकुल बच्चा था।

लेखक कहता है कि जिस तरह टोपी अपने भरे-पूरे घर में भी अकेलापन महसूस करता था, उसी तरह अपने स्कूल में भी अकेला हो गया था। मास्टर्स ने उसकी ओर ध्यान देना बिलकुल ही छोड़ दिया था, कोई सवाल किया जाता और जवाब देने के लिए जब टोपी भी हाथ उठाता, तो कोई मास्टर उससे जवाब नहीं पूछता था। परन्तु जब टोपी ने हार नहीं मानी और अपना हाथ उठाता ही रहा, तो एक दिन अंग्रेजी-साहित्य के मास्टर साहब ने कहा कि टोपी तो तीन साल से यही किताब पढ़ रहा है, उसे तो सारे जवाब

जुबानी याद हो गए होंगे, उसके साथ बैठे इन लड़कों को अगले साल हाई स्कूल की परीक्षा देनी है। उन्हें इस साल इन लड़कों से प्रश्न पूछने दो, टोपी से तो वे आने वाले साल में भी पूछ सकते हैं। अंग्रेजीसाहित्य के मास्टर साहब की इस बात को सुन कर टोपी इतना शर्माया कि उ-सका काला रंग भी लाल हो गया। और जब सभी बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े तो टोपी मानो बिलकुल मर ही गया हो। जब वह पहली बार नवीं कक्षा में आया था, तो वह भी इन्हीं बच्चों की तरह बिलकुल बच्चा ही था। और अब दो साल इसी कक्षा में होने के कारण वह बिलकुल बूढ़ा लगता था

एक ऐसी बात कही कि टोपी बहुत अधिक गुस्से में आ गया। वहीद कक्षा का सबसे तेज़ लड़का था। कक्षा का मुखिया भी था।सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह लाल तेल वाले डॉक्टर शुरफुद्दीन का बेटा था। अबदुल वहीद ने टोपी से कहा कि वह उन लोगों के साथ क्यों खेलता है। उसे तो आठवीं कक्षा वालों से दोस्ती करनी चाहिए क्योंकि वे लोग तो आगे दसवीं कक्षा में चले जाएँगे और टोपी को तो आठवीं वालों के साथ ही रहना है तो उनसे दोस्ती करना टोपी के लिए अच्छा होगा। यह बात टोपी को बहुत बुरी लगी और ऐसा लगा जैसे यह बात उसके दिल के आरपार हो गई हो। और- उसने उसी समय कसम खाई कि इस साल उसे टाइफाइड हो या टाइफाइड का बाप, वह पास होकर ही दिखाएगा।परन्तु साल के बीच में ही चुनाव आ गए। टोपी के पिता डॉक्टर भृगु नारायण, नीले तेल वाले, चुनाव लड़ने के लिए खड़े हो गए। अब जिस घर में कोई चुनाव के लिए खड़ा हो, उस घर में कोई पढ़लिख कैसे सकता है-? वह तो जब डॉक्टर साहब चुनाव हार गए तब घर में थोड़ी शांति हुई और टोपी ने देखा कि उसकी परीक्षा को ज्यादा समय नहीं रहा है। वह पढ़ाई में जुट गया। परन्तु जैसा वातावरण टोपी के घर में बना हुआ था ऐसे वातावरण में कोई कैसे पढ़ सकता था? इसलिए टोपी का पास हो जाना ही बहुत था। टोपी के दो साल एक ही कक्षा में रहने के बाद जब वह पास हुआ तो

उसकी दादी बोली कि वाहबंद से बचाए। बहुत अच्छी रफ़्तार पकड़ी है। -टोपी को भगवान नजरे ! तीसरे साल पास हुआ वो भी तीसरी श्रेणी में, चलो पास तो हो गया।

प्रश्न उत्तर:-

प्रश्न 1 - इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?

उत्तर - इफ़्फ़न टोपी का पहला दोस्त था। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे थे। दोनों एक दूसरे से कोई बात नहीं छुपाते थे। टोपी का इफ़्फ़न की दादी से भी बहुत गहरा नाता था क्योंकि जो प्यार और अपनापन टोपी को उसके घर में नहीं मिला वह इफ़्फ़न और इफ़्फ़न की दादी से मिला। इसलिए कहा जा सकता है कि इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

प्रश्न 2 - इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थीं?

उत्तर - इफ़्फ़न की दादी किसी इस्लामी आचार्य की बेटी नहीं थी बल्कि एक जमींदार की बेटी थी। दूध-घी खाती हुई बड़ी हुई थी परन्तु लखनऊ आ कर वह उस दही के लिए तरस गई थी। जब भी वह अपने मायके जाती तो जितना उसका मन होता, जी भर के खा लेती क्योंकि लखनऊ वापिस आते ही उन्हें फिर मौलविन बन जाना पड़ता। यही कारण था कि इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर जाना चाहती थीं।

प्रश्न 3 - दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी क्यों नहीं कर पाई?

उत्तर - दादी की शादी एक मौलवी परिवार में हुई थी और मौलवियों के घर में शादी-ब्याह के अवसर पर कोई गाना-बजाना नहीं होता। इसी वजह से दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी नहीं कर पाई।

प्रश्न 4 - 'अम्मी' शब्द पर टोपी के घरवालों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर - अम्मी! यह शब्द सुनते ही खाने की मेज़ पर बैठे सभी लोग चौंक गए, उनके हाथ खाना खाते-खाते रुक गए। वे सभी लोग टोपी के चेहरे की ओर देखने लगे। 'अम्मी' शब्द उर्दू का था और टोपी हिन्दू था, उसके मुँह से यह शब्द सुन कर ऐसा लग रहा था जैसे रीति-रिवाजों की दीवार हिलने लगी हो। टोपी की दादी सुभद्रादेवी तो उसी वक्त खाने की मेज़ से उठ गई और टोपी की माँ रामदुलारी ने टोपी को बहुत मारा।

प्रश्न 5 - दस अक्टूबर सन पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में क्या महत्व रखता है?

उत्तर - दस अक्टूबर सन पैंतालीस का ऐसे तो कोई महत्व नहीं है परन्तु टोपी के जीवन के इतिहास में इस तारीख का बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि इस तारीख को इफ़्फ़न के पिता बदली पर मुरादाबाद चले गए। इफ़्फ़न की दादी के मरने के थोड़े दिनों बाद ही इफ़्फ़न के पिता की बदली हुई थी। टोपी दादी के मरने के बाद तो अपनेआप को अकेला महसूस कर ही रहा था और अब इफ़्फ़न के चले जाने पर वह और भी अकेला हो गया था। इसीलिए टोपी ने दस अक्टूबर सन पैंतालीस को कसम खाई कि अब वह किसी भी ऐसे लड़के से कभी भी दोस्ती नहीं करेगा जिसके पिता कोई ऐसी नौकरी करते हो जिसमें बदली होती रहती हो।

प्रश्न 6 - टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही?

उत्तर - इफ़्फ़न के घर में टोपी का सबसे अधिक मेलमिलाप उसकी दादी से था। दादी की बोली उसे बहुत पसंद

थी और टोपी की माँ की बोली भी वही थी। टोपी को इफ़्फ़न की दादी का हर एक शब्द शक्कर की तरह मीठा लगता था। पके आम के रस को सूखाकर बनाई गई मोटी परत की तरह मज़ेदार लगता। तिल के बने व्यंजनों की तरह अच्छा लगता और वह दादी की डाँट सुन कर चुपचाप उनके पास चला आता। टोपी को अपनी दादी बिलकुल भी अच्छी नहीं लगती थी। इसीलिए टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही।

प्रश्न 7 - पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह क्यों था?

उत्तर - इफ़्फ़न को अपनी दादी से बहुत ज्यादा प्यार था। प्यार तो उसे अपने अब्बू, अम्मी, बड़ी बहन और छोटी बहन नुज़हत से भी था परन्तु दादी से वह सबसे ज्यादा प्यार किया करता था। अम्मी तो कभी-कभार इफ़्फ़न को डाँट देती थी और कभी-कभी तो मार भी दिया करती थी। बड़ी बहन भी अम्मी की ही तरह कभी-कभी डाँटती और मारती थी। अब्बू भी कभी-कभार घर को न्यायालय समझकर अपना फैसला सुनाने लगते थे। नुज़हत को जब भी मौका मिलता वह उसकी कापियों पर तस्वीरें बनाने लगती थी। बस एक दादी ही थी जिन्होंने कभी भी किसी बात पर उसका दिल नहीं दुखाया था। यही कारण था कि पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह था।

प्रश्न 8 - इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा क्यों लगा?

उत्तर - टोपी और दादी में एक ऐसा सम्बन्ध हो चुका था जिसे शायद अगर इफ़्फ़न के दादा जीवित होते तो वह भी बिलकुल उसी तरह न समझ पाते जैसे टोपी के घरवाले न समझ पाए थे। दोनों अलग-अलग अधूरे थे। एक ने दूसरे को पूरा कर दिया था। दोनों ही प्यार के प्यासे थे और एक ने दूसरे की इस प्यास को बुझा दिया था। दोनों अपने-अपने घरों में अजनबी और भरे घर में अकेले थे क्योंकि दोनों को ही उनके घर में कोई समझने वाला नहीं था। दोनों ने एक दूसरे के अकेलापन को दूर कर दिया था। दादी जितना प्यार इफ़्फ़न से करती थी उतना ही टोपी से भी करती थी। दादी दोनों को ही कहानियाँ सुनाया करती थी। इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा इसलिए भी लगा क्योंकि टोपी इफ़्फ़न के घर में केवल दादी से ही मिलने जाया करता था।

प्रश्न 9 - टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथा के आलोक में अपने विचार लिखिए।

उत्तर - टोपी हिन्दू धर्म से था और इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम थी। परन्तु टोपी और दादी का रिश्ता इतना अधिक अटूट था कि टोपी को इफ़्फ़न के घर जाने के लिए मार भी पड़ी थी परन्तु टोपी दादी से मिलने, उनकी कहानियाँ सुनाने और उनकी मीठी पूरबी बोली सुनने रोज इफ़्फ़न के घर जाता था। दादी रोज उसे कुछ-न-कुछ खाने को देती पर टोपी कभी नहीं खता था। उसे तो दादी का हर एक शब्द गुड़ की डली की तरह लगता था। टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। दोनों एक दूसरे को खूब समझते थे।

प्रश्न 10 - टोपी नवीं कक्षा में दो बार फेल हो गया। बताइए -

(क) ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के क्या कारण थे?

उत्तर - वह पढ़ाई में बहुत तेज़ था परन्तु उसे कोई पढ़ने ही नहीं देता था। जब भी टोपी पढ़ाई करने बैठता, तो कभी उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू को कोई काम याद आ जाता या उसकी माँ को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती जो नौकरों से नहीं मँगवाई जा सकती थी। अगर ये सारी चीज़ें न होती तो कभी उसका छोटा भाई भैरव उसकी कापियों के पन्नों को फाड़ कर उनके हवाई जहाज़ बना कर उड़ाने लग जाता। यह तो थी पहले साल की बात। दूसरे साल उसे टाइफ़ाइड हो गया था। जिसके कारण वह पढ़ाई नहीं कर पाया और दूसरी साल भी फेल हो गया।

(ख) एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

उत्तर - मास्टर्स ने उसकी ओर ध्यान देना बिलकुल ही छोड़ दिया था, कोई सवाल किया जाता और जवाब देने के लिए जब टोपी भी हाथ उठाता, तो कोई मास्टर उससे जवाब नहीं पूछता था। वहीद जो कक्षा का सबसे तेज़ लड़का था, उसने टोपी से कहा कि वह उन लोगों के साथ क्यों खेलता है। उसे तो आठवीं कक्षा वालों से दोस्ती करनी चाहिए क्योंकि वे लोग तो आगे दसवीं कक्षा में चले जाएँगे और टोपी को तो आठवीं वालों के साथ ही रहना है तो उनसे दोस्ती करना टोपी के लिए अच्छा होगा। टोपी ने किसी न किसी तरह एक साल को झेल लिया। परन्तु जब सन इक्यावन में भी उसे नवीं कक्षा में ही बैठना पड़ा तो वह बिलकुल गीली मिट्टी का पिंड हो गया, क्योंकि अब तो दसवीं में भी कोई उसका दोस्त नहीं रह गया था। जो विद्यार्थी सन उनचास में आठवीं कक्षा में थे वे अब दसवीं कक्षा में थे। जो सन उनचास में सातवीं कक्षा में थे, वे टोपी के साथ पहुँच गए थे। उन सभी के बीच में वह अच्छा-खासा बूढ़ा दिखाई देने लगा था।

(ग) टोपी की भावनात्मक परेशानियों को मद्देनज़र रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक बदलाव सुझाइए।
उत्तर - बच्चे फ़ेल होने पर मानसिक रूप से परेशान हो जाते हैं। वे उसी कक्षा में अपने से छोटे विद्यार्थियों के साथ बैठने में शर्म महसूस करते हैं। अध्यापको को चाहिए की वे फेल हुए बच्चों पर भी उतना ही ध्यान दें, जितना दूसरे बच्चों पर दिया जाता है। बच्चों को केवल किताबी ज्ञान पर ही नहीं परखना चाहिए।

प्रश्न 11 - इफ़्फ़न की दादी के मायके का घर कस्टोडियन में क्यों चला गया?

उत्तर कस्टोडियन अर्थात सरकारी कब्ज़ा। इफ़्फ़न की दादी के मायके वाले जब कराची में रहने चले गए तो उनके पुराने घर की देखभाल के लिए कोई नहीं रह गया था। उनका उनके घर पर कोई मालिकाना हक भी नहीं रहा था। इसी कारण इफ़्फ़न की दादी के मायके का घर कस्टोडियन में चला गया।

व्याकरण भाग:-

संधि की परिभाषा:-

दो वर्णों (स्वर या व्यंजन) के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

सरल शब्दों में- दो शब्दों या शब्दांशों के मिलने से नया शब्द बनने पर उनके निकटवर्ती वर्णों में होने वाले परिवर्तन या विकार को संधि कहते हैं।

संधि के भेद:-

(1)स्वर संधि

(2)व्यंजन संधि

(3)विसर्ग संधि

(1)स्वर संधि- दो स्वरों से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं।

जैसे- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी,

सूर्य + उदय = सूर्योदय,

मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र,

कवि + ईश्वर = कवीश्वर,

महा + ईश = महेश

इनके पाँच भेद होते हैं -

(i)दीर्घ संधि

(ii)गुण संधि

(iii)वृद्धि संधि

(iv)यण संधि

(v)अयादी संधि

(i)दीर्घ संधि-

जब दो सवर्ण, ह्रस्व या दीर्घ, स्वरों का मेल होता है तो वे दीर्घ सवर्ण स्वर बन जाते हैं। इसे दीर्घ स्वर-संधि कहते हैं।

अ + अ= आ

अत्र + अभाव= अत्राभाव

कोण + अर्क= कोणार्क

अ + आ= आ

शिव + आलय= शिवालय

भोजन + आलय= भोजनालय

आ + अ= आ

विद्या + अर्थी= विद्यार्थी

लज्जा + अभाव= लज्जाभाव

आ + आ= आ

विद्या + आलय= विद्यालय

महा + आशय= महाशय

इ + इ= ई

गिरि + इन्द्र= गिरीन्द्र

इ + ई= ई

गिरि + ईश= गिरीश

ई + इ= ई	मही + इन्द्र= महीन्द्र
ई + ई= ई	पृथ्वी + ईश= पृथ्वीश
उ + उ= ऊ	भानु + उदय= भानूदय
ऊ + उ= ऊ	स्वयम्भू + उदय= स्वयम्भूदय
ऋ + ऋ= ऋ	पितृ + ऋण= पितृण

(ii) गुण संधि- अ, आ के साथ इ, ई का मेल होने पर 'ए'; उ, ऊ का मेल होने पर 'ओ'; तथा ऋ का मेल होने पर 'अर्' हो जाने का नाम गुण संधि है।

अ + इ= ए	देव + इन्द्र= देवन्द्र
अ + ई= ए	देव + ईश= देवेश
आ + इ= ए	महा + इन्द्र= महेन्द्र
अ + उ= ओ	चन्द्र + उदय= चन्द्रोदय
अ + ऊ= ओ	समुद्र + ऊर्मि= समुद्रोर्मि
आ + उ= ओ	महा + उत्स्व= महोत्स्व
आ + ऊ= ओ	गंगा + ऊर्मि= गंगोर्मि
अ + ऋ= अर्	देव + ऋषि= देवर्षि

(iii) वृद्धि संधि- अ, आ का मेल ए, ऐ के साथ होने से 'ऐ' तथा ओ, औ के साथ होने से 'औ' में परिवर्तन को वृद्धि संधि कहते हैं।

जैसे-

अ + ए =ऐ	एक + एक =एकैक
अ + ऐ =ऐ	नव + ऐश्वर्य =नवैश्वर्य
आ + ए=ऐ	महा + ऐश्वर्य=महैश्वर्य
	सदा + एव =सदैव
अ + ओ =औ	परम + ओजस्वी =परमौजस्वी
	वन + ओषधि =वनौषधि

अ + औ = औ

परम + औषध = परमौषध

आ + ओ = औ

महा + ओजस्वी = महौजस्वी

आ + औ = औ

महा + औषध = महौषध

(iv) यण संधि- इ, ई, उ, ऊ या ऋ का मेल यदि असमान स्वर से होता है तो इ, ई को 'य'; उ, ऊ को 'व' और ऋ को 'र' हो जाता है। इसे यण संधि कहते हैं।

जैसे-

(क) इ + अ = य

यदि + अपि = यद्यपि

इ + आ = या

अति + आवश्यक = अत्यावश्यक

इ + उ = यु

अति + उत्तम = अत्युत्तम

इ + ऊ = यू

अति + उष्म = अत्यूष्म

(ख) उ + अ = व

अनु + आय = अन्वय

उ + आ = वा

मधु + आलय = मध्वालय

उ + ओ = वो

गुरु + ओदन = गुरौदन

उ + औ = वौ

गुरु + औदार्य = गुरौदार्य

उ + इ = वि

अनु + इत = अन्वित

उ + ए = वे

अनु + एषण = अन्वेषण

(ग) ऋ + आ = रा

पितृ + आदेश = पित्रादेश

(v) अयादि स्वर संधि- ए, ऐ तथा ओ, औ का मेल किसी अन्य स्वर के साथ होने से क्रमशः अय्, आय् तथा अव्, आव् होने को अयादि संधि कहते हैं।

जैसे-

ए + अ = य

ने + अन = नयन

ऐ + अ = य

गै + अक = गायक

ओ + अ = व

भो + अन = भवन

औ + उ = वु

भौ + उक = भावुक

(2) व्यंजन संधि (Combination of Consonants) :- व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- एक व्यंजन के दूसरे व्यंजन या स्वर से मेल को व्यंजन-संधि कहते हैं।

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि 'म्' के बाद कोई व्यंजन वर्ण आये तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है या वह बादवाले वर्ण के पंचम वर्ण में भी बदल सकता है।

जैसे- अहम् + कार =अहंकार

पम् + चम =पंचम

सम् + गम =संगम

(2) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो 'त्-द्' 'ल्' में बदल जाते हैं और 'न्' के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के बाद 'ल्' हो जाता है।

जैसे- उत् + लास =उल्लास

महान् + लाभ =महान्लाभ

(3) किसी वर्ण के पहले वर्ण ('क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प') का मेल किसी स्वर या वर्ण के तीसरे, चौथे वर्ण या र ल व में से किसी वर्ण से हो तो वर्ण का पहला वर्ण स्वयं ही तीसरे वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। यथा-

दिक् + गज =दिग्गज (वर्ण के तीसरे वर्ण से संधि)

षट् + आनन =षडानन (किसी स्वर से संधि)

षट् + रिपु =षड्रिपु (र से संधि)

अन्य उदाहरण

जगत् + ईश =जगतदीश

तत् + अनुसार =तदनुसार

वाक् + दान =वाग्दान

दिक् + दर्शन =दिग्दर्शन

वाक् + जाल =वगजाल

अप् + इन्धन =अबिन्धन

तत् + रूप =तद्रूप

(4) यदि 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प', के बाद 'न' या 'म' आये, तो क्, च्, ट्, त्, प, अपने वर्ण के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं। जैसे-

वाक्+मय =वाङ्मय

अप् +मय =अम्मय

षट्+मार्ग =षणमार्ग

जगत् +नाथ=जगत्राथ

उत् +नति =उत्रति

षट् +मास =षण्मास

5) सकार और तवर्ण का शकार और चवर्ण के योग में शकार और चवर्ण तथा षकार और टवर्ण के योग में षकार और टवर्ण हो जाता है। जैसे-

सश्+ रामस् रामश्शेते= शेते+

त्च+ सत् सच्चित्= चित्+

त्छ+	महत् महच्छत्र= छात्र+
त् ण+	महत् महण्णकार= णकार+
ष्त+	द्रष् द्रष्टा= ता+
त्ट+	बृहत् बृहटिट्ठिभ=टिट्ठिभ+

(6) यदि वर्गों के अन्तिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद 'ह' आये, तो 'ह' पूर्ववर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है और 'ह' के पूर्ववाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण।

जैसे-

उत्उद्धत= हत+

उत्उद्धार= हार+

वाक् वाग्घरि= हरि+

(7) स्वर के साथ छ का मेल होने पर छ के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है।

जैसे-

परि परिच्छेद =छेद +

शाला शालाच्छादन =छादन +

आ आच्छादन =छादन +

(8) त् या द् का मेल च या छ से होने पर त् या द् के स्थान पर च् होता है; ज या झ से होने पर ज्; ट या ठ से होने पर ट्; ड या ढ से होने पर ड् और ल होने पर ल् होता है।

उदाहरण-

जगत् जगच्छाया= छाया +

उत् उच्चारण= चारण +

सत् सज्जन= जन +

तत् तल्लीन= लीन +

(9) त् का मेल किसी स्वर, ग, घ, द, ध, ब, भ, र से होने पर त् के स्थान पर द् हो जाता है।

जैसे-

सत् सद= इच्छा +च्छा

जगत् जगदीश= ईश +

तत् तद्रूप= रूप +

भगवत् भगवद् भक्ति= भक्ति +

(10) त् या द् का मेल श से होने पर त् या द् के स्थान पर च् और श के स्थान पर छ हो जाता है।

जैसे-

उत् उच्छ्वास= श्वास +

सत् सच्छास्त्र= शास्त्र +

(11) त् या द् का मेल ह से होने पर त् या द् के स्थान पर द् और ह से स्थान पर ध हो जाता है।

जैसे-

पद् पद्धति= हति +

उत् उद्धार= हार +

(12) म् का क से म तक किसी वर्ण से मेल होने पर म् के स्थान पर उस वर्ण वाले वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाएगा।

जैसे-

सम् सन्तुष्ट= तुष्ट +

सम् संयोग= योग +

(3) विसर्ग संधि (Combination Of Visarga) :- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन मेल से जो विकार होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- स्वर और व्यंजन के मेल से विसर्ग में जो विसर्ग होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं- विसर्ग के साथ (:) जब किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तो उसे विसर्गसंधि कहते हैं।

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ण का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुणसन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है।

जैसे-

मनः मनोरथ= रथ +

सरः सरोज= ज +

मनः मनोभाव= भाव +

पयः पयोद= द +

मनः मनोविकार = विकार +

पयः पयोधर= धर +

मनः मनोहर= हर +

वयः वयोवृद्ध= वृद्ध +

यशः यशोधरा= धरा +

सरः सरोवर= वर +

तेजः तेजोमय= मय +

यशः यशोदा= दा +

पुरः पुरोहित= हित +

मनः मनोयोग= योग +

(2) यदि विसर्ग के पहले इ या उ आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो, तो विसर्ग 'ष्' में बदल जाता है।

जैसे-

निः निष्कपट= कपट +

निः निष्फल= फल +

निः निष्पाप= पाप +

दुः दुष्कर= कर +

(3) विसर्ग से पूर्व अ, आ तथा बाद में क, ख या प, फ हो तो कोई परिवर्तन नहीं होता।

जैसे-

प्रातः प्रातःकाल =काल +

पयः पयःपान =पान +

अन्तः अन्तःकरण =करण +

अंतः अंतःपुर =पुर +

(4) यदि 'इ' - 'उ' के बाद विसर्ग हो और इसके बाद 'र' आये, तो 'इ' - 'उ' का 'ई' - 'ऊ' हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है।

जैसे-

निः नीरव= रव +

निः नीरस= रस +

निः नीरोग= रोग +

दुः दूराज= राज +

(5) यदि विसर्ग के पहले 'अ' और 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आये और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो, तो विसर्ग के स्थान में 'र्' हो जाता है। जैसे-

निः निरुपाय= उपाय +

निः निर्झर= झर +

निः निर्जल= जल +

निः निर्धन= धन +

दुः दुर्गन्ध= गन्ध +

निः निर्गुण= गुण +

निः निर्विकार= विकार +

दुः दुरात्मा= आत्मा +

दुः दुर्नीति= नीति +

निः निर्मल= मल +

(6) यदि विसर्ग के बाद 'चश-छ-' हो तो विसर्ग का 'श्', 'टष-ठ-' हो तो 'ष्' और 'तस-थ-' हो तो 'स्' हो जाता है।

जैसे-

निः निश्चय=चय +

निः निश्छल= छल +

निः निस्तार= तार +

निः निस्सार= सार +

निः निश्शेष= शेष +

निः निष्ठीव= ष्ठीव +

(7) यदि विसर्ग के आगे पीछे-'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' हो जाता है और विसर्ग के बादवाले 'अ' का लोप होता है तथा उसके स्थान पर लुप्ताकार का चिह्न लगा दिया जाता है। (s)

जैसे-

प्रथमः प्रथमोऽध्याय= अध्याय +

मनः मनोऽभिलषित= अभिलषित +

यशः यशोऽभिलाषी =अभिलाषी +

(8) विसर्ग से पहले आ को छोड़कर किसी अन्य स्वर के होने पर और विसर्ग के बाद र रहने पर विसर्ग लुप्त हो जाता है और यदि उससे पहले ह्रस्व स्वर हो तो वह दीर्घ हो जाता है।

जैसे-

निनीरस= रस + :

निनीरोग= रोग + :

(9) विसर्ग के बाद श, ष, स होने पर या तो विसर्ग यथावत् रहता है या अपने से आगे वाला वर्ण हो जाता है।

जैसे-

निनिःसंदेह अथवा निस्संदेह= संदेह + :

निनिःसहाय अथवा निस्सहाय= सहाय + :

शुद्ध-अशुद्ध -वाक्य :-

अशुद्ध - ये बक्सा बहुत भारी है।

शुद्ध - यह बक्सा बहुत भारी है।

अशुद्ध - इस वर्ष गेहूँ का फ़सल अच्छा हुआ।

शुद्ध - इस वर्ष गेहूँ की फ़सल अच्छी हुई।

अशुद्ध - पैंट सिल गया है, पर बटन नहीं टँका है ।

शुद्ध - पैंट सिल गई है, पर बटन नहीं टँके हैं।

अशुद्ध - आपके एक-एक शब्द प्रभावशाली होते।

शुद्ध - आपका एक-एक शब्द प्रभावशाली होता ।

अशुद्ध -उसके अंग-अंग काट डाले गए।

शुद्ध - उसका अंग-अंग काट डाला गया।

अशुद्ध - गिरते ही उसका प्राण निकल गया।

शुद्ध - गिरते ही उसके प्राण निकल गए।

अशुद्ध - कक्षा में बीस बच्चा अवश्य होना चाहिए।

शुद्ध - कक्षा में बीस बच्चे अवश्य होने चाहिए।

अशुद्ध - घर पर सब कुशल हैं।

शुद्ध - घर में सब कुशल हैं।

अशुद्ध - मैंने हँस दिया।

शुद्ध - मैं हँस दिया।

अशुद्ध - मेरा भाई कल को आएगा।

शुद्ध - मेरा भाई कल आएगा।

अशुद्ध - अच्छे व्यवहार को रखो।

शुद्ध - अच्छा व्यवहार रखो।

अशुद्ध - यह पुस्तक अनंत का है।

शुद्ध - यह पुस्तक अनंत की है।

अशुद्ध - वह घर को जा रहा है।

शुद्ध - वह घर जा रहा है।

अशुद्ध - दरवाज़ा का बाईं ओर बरामदा है।

शुद्ध - दरवाज़े के बाईं ओर बरामदा है।

अशुद्ध - आप आए पर तुम बैठे नहीं।

शुद्ध - आप आए पर आप बैठे नहीं।

अशुद्ध - वह लोग कल आ जाएँगे।

शुद्ध - वे लोग कल आ जाएँगे।

अशुद्ध - तुम तुम्हारी किताब निकालो।

शुद्ध - तुम अपनी किताब निकालो।

अशुद्ध - मेरे को तेरे से ज़रूरी काम

शुद्ध - मुझे तुझसे ज़रूरी काम है।

अशुद्ध - इन सबों ने मेरी शिकायत करी।

शुद्ध - इन सबने मेरी शिकायत की।

अशुद्ध - मैंने आज काम पूरा कर लेना है।

शुद्ध - मैं आज काम पूरा कर लूंगा।

अशुद्ध - आपको मिलकर मैं अति प्रसन्न हुआ।

शुद्ध - आपसे मिलकर मुझे अति प्रसन्नता हुई।

अशुद्ध - क्रोध में उसने सारे आभूषण उतार फेंका।

शुद्ध - क्रोध में उसने सारे आभूषण उतार फेंके।

अशुद्ध - तुमने यह क्या करा?

शुद्ध - तुमने यह क्या किया ?

अशुद्ध - यहाँ एक औरत और एक आदमी बैठा था।

शुद्ध - यहाँ एक औरत और एक आदमी बैठे थे।

अशुद्ध - देश-रक्षा के लिए हम सेना पर निर्भर करते

शुद्ध - देश-रक्षा के लिए हम सेना पर निर्भर हैं।

अशुद्ध -विवेकानंद जीवन तक ब्रह्मचारी रहे।

शुद्ध - विवेकानंद आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

अशुद्ध - वहाँ कोई लगभग पाँच सौ लोग थे।

शुद्ध - वहाँ लगभग पाँच सौ लोग थे।

अशुद्ध - उसके पास केवल नाममात्र धन रह गया है।

शुद्ध - उसके पास नाममात्र धन रह गया है।

अशुद्ध - सारा माल हाथ-हाथ बिक गया।

शुद्ध - सारा माल हाथों-हाथ बिक गया।

अशुद्ध मेरी बात ध्यान के साथ सुनो। -

शुद्ध मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो। -

समास का तात्पर्य होता है - संछिप्तीकरण। इसका शाब्दिक अर्थ होता है छोटा रूप। अर्थात् जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उस शब्द को समास कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जहाँ पर कम-से-कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रकट किया जाए वह समास कहलाता है।

संस्कृत, जर्मन तथा बहुत सी भारतीय भाषाओं में समास का बहुत प्रयोग किया जाता है। समास रचना में दो पद होते हैं, पहले पद को 'पूर्वपद' कहा जाता है और दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहा जाता है। इन दोनों से जो नया शब्द बनता है वो समस्त पद कहलाता है।

समास और संधि में अंतर :-

संधि का शाब्दिक अर्थ होता है मेल। संधि में उच्चारण के नियमों का विशेष महत्व होता है। इसमें दो वर्ण होते हैं इसमें कहीं पर एक तो कहीं पर दोनों वर्णों में परिवर्तन हो जाता है और कहीं पर तीसरा वर्ण भी आ जाता है। संधि किये हुए शब्दों को तोड़ने की क्रिया विच्छेद कहलाती है। संधि में जिन शब्दों का योग होता है उनका मूल अर्थ नहीं बदलता।

समास का शाब्दिक अर्थ होता है संक्षेप। समास में वर्णों के स्थान पर पद का महत्व होता है। इसमें दो या दो से अधिक पद मिलकर एक समस्त पद बनाते हैं और इनके बीच से विभक्तियों का लोप हो जाता है। समस्त पदों को तोड़ने की प्रक्रिया को विग्रह कहा जाता है। समास में बने हुए शब्दों के मूल अर्थ को परिवर्तित किया भी जा सकता है और परिवर्तित नहीं भी किया जा सकता है।

जैसे :- विषधर = विष को धारण करने वाला अर्थात् शिव।

पुस्तक+आलय = पुस्तकालय।

समास के भेद :

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास

4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास क्या होता है :-

इसमें प्रथम पद प्रधान होता है। इसमें प्रथम पद अव्यय होता है जैसे-तथा ,प्रति ,आ ,यथा ,अनु, अन आदि लगा होता है।

उदा:-

- यथाशक्ति शक्ति के अनुसार =
- यथाक्रम क्रम के अनुसार =
- यथानियम नियम के अनुसार =
- प्रतिदिन प्रत्येक दिन =
- प्रतिवर्ष हर वर्ष=
- आजन्म जन्म से लेकर =र
- यथासाध्य जितना साधा जा सके =
- धडाधड धड की आवाज के साथ-धड =
- घरप्रत्येक घर = घर-
- रातों रात रात ही रात में =
- आमरण मृत्यु तक =
- यथाकाम इच्छानुसार =
- यथास्थान स्थान के अनुसार =
- अभूतपूर्व जो पहले नहीं हुआ =
- निर्भय बिना भय के =
- निर्विवाद बिना विवाद के =
- निर्विकारबिना विकार के =
- प्रतिपल हर पल =
- अनुकूल मन के अनुसार =
- अनुरूप रूप के अनुसार =
- यथासमय समय के अनुसार =
- यथाशीघ्र शीघ्रता से =

- अकारण बिना कारण के =
- यथासामर्थ्य सामर्थ्य के अनुसार =
- यथाविधि विधि के अनुसार =
- भरपेट पेट भरकर =
- हाथोंहाथ हाथ ही हाथ में =
- बेशक शक =के बिना
- खुबसूरत अच्छी सूरत वाली =

2. तत्पुरुष समास क्या होता है :- इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है। यह कारक से जुदा समास होता है।

इसे बनाने में दो पदों के बीच कारक चिन्हों का लोप हो जाता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
उदा:

- देश के लिए भक्ति देशभक्ति =
- राजा का पुत्र राजपुत्र =
- शर से आहत शराहत =
- राह के लिए खर्च राहखर्च =
- तुलसी द्वारा कृत तुलसीदासकृत =
- राजा का महल राजमहल =
- राजा का कुमार राजकुमार =
- धर्म का ग्रंथ धर्मग्रंथ =

(को वाले)

- रथचालक रथ को चलने वाला =
- ग्रामगत ग्राम को गया हुआ =
- माखनचोर माखन को चुराने वाला=
- वनगमन वन को गमन=
- मुंहतोड़ मुंह को तोड़ने वाला =
- स्वर्गप्राप्त स्वर्ग को प्राप्त =
- देशगत देश को गया हुआ =
- जनप्रियजन को प्रिय =

- मरणासन्न मरण को आसन्न =
- गिरहकट गिरह को काटने वाला =
- कुंभकार कुंभ को बनाने वाला =
- गृहागत गृह को आगत =
- कठफोड़वा कांठ को फोड़ने वाला =
- शत्रुघ्न शत्रु को मारने वाला =
- गिरिधर गिरी को धारण करने वाला =
- मनोहर मन को हरने वाला =

(से वाले)

- स्वरचित स्व द्वारा रचित =
- मनचाहा =मन से चाहा
- शोकग्रस्त शोक से ग्रस्त =
- भुखमरी भूख से मरी =
- धनहीन धन से हीन =
- बाणाहत बाण से आहत =
- ज्वरग्रस्त ज्वर से ग्रस्त =
- मदांध मद से अँधा =
- रसभरा रस से भरा =
- आचारकुशल आचार से कुशल =
- भयाकुल भय से आकुल =
- आँखोंदेखी आँखों से देखी =
- तुलसीकृत तुलसी द्वारा =रचित
- रोगातुर रोग से आतुर =
- पर्णकुटीर पर्ण से बनी कुटीर =
- कर्मवीर कर्म से वीर =
- रक्तरंजित रक्त से रंजित =
- जलाभिषेक जल से अभिषेक =
- रोगग्रस्त रोग से ग्रस्त =

(के लिए)

- विद्यालय विद्या के लिए आलय =
- रसोईघर रसोई के लिए घर =
- सभाभवन सभा के लिए भवन =
- विश्रामगृह विश्राम के लिए गृह =
- गुरुदक्षिणा गुरु के लिए दक्षिणा =
- प्रयोगशाला प्रयोग के लिए शाला =
- देशभक्ति देश के लिए भक्ति =
- स्नानघर स्नान के लिए घर =
- सत्यागृह सत्य के लिए आग्रह =
- यज्ञशाला यज्ञ के लिए शाला =
- डाकगाड़ी डाक के लिए गाड़ी =
- देवालय देव के लिए आलय =
- गौशाला गौ के लिए शाला =
- युद्धभूमि युद्ध के लिए भूमि =
- हथकड़ी हाथ के लिए कड़ी =
- धर्मशाला धर्म के लिए शाला =
- पुस्तकालय पुस्तक के लिए आलय =
- राहखर्च राह के लिए खर्च =

(अपादान वाला से)

- कामचोर काम से जी चुराने वाला =
- दूरागत दूर से आगत =
- रणविमुख रण से विमुख =
- नेत्रहीन नेत्र से हीन =
- पापमुक्त पाप से मुक्त =
- देशनिकाला देश से निकाला =
- पथभ्रष्ट =पथ से भ्रष्ट
- पदच्युत पद से च्युत =

- जन्मरोगी जन्म से रोगी =
- रोगमुक्त रोग से मुक्त =
- जन्मांध जन्म से अँधा =
- कर्महीन कर्म से हीन =
- वनरहित वन से रहित =
- अन्नहीन अन्न से हीन =
- जलहीन जल से हीन =
- गुणहीन गुण से हीन =
- फलहीन फल से हीन =
- भयभीत भय से डरा हुआ =

(का,की,के,रा,री,रे)

- राजपुत्र राजा का पुत्र =
- गंगाजल गंगा का जल =
- लोकतंत्र लोक का तंत्र =
- दुर्वादल दुर्व का दल =
- देवपूजा देव की पूजा =
- आमवृक्ष आम का वृक्ष =
- राजकुमारी राज की कुमारी =
- जलधारा जल की धारा =
- राजनीति राजा की नीति =
- सुखयोग सुख का योग =
- मूर्तिपूजा मूर्ति की पूजा =
- श्रधकण श्रधा के कण =
- शिवालय शिव का आलय =
- देशरक्षा देश की रक्षा =
- सीमारेखा सीमा की रेखा =

(में,पर वाला)

- राजपुत्र राजा का पुत्र =

- गंगाजल गंगा का जल =
- लोकतंत्र लोक का तंत्र =
- दुर्वादल दुर्व का दल =
- देवपूजा देव की पूजा =
- आमवृक्ष आम का वृक्ष =
- राजकुमारी राज की कुमारी =
- जलधारा जल की धारा =
- राजनीति राजा की नीति =
- सुखयोग सुख का योग =
- मूर्तिपूजा मूर्ति की पूजा =
- श्रधकण श्रधा के कण =
- शिवालय शिव का आलय =
- देशरक्षा देश की रक्षा =
- सीमारेखा सीमा की रेखा =
- वनवास वन में वास =
- ईस्वरभक्ति ईस्वर में भक्ति =
- आत्मविश्वास आत्मा पर विश्वास =
- दीनदयाल = दीनों पर दयाल
- दानवीर दान देने में वीर =
- आचारनिपुण आचार में निपुण =
- जलमग्न जल में मग्न =
- सिरदर्द सिर में दर्द =
- कलाकुशल कला में कुशल =
- शरणागत शरण में आगत =
- आनन्दमग्न आनन्द में मग्न =
- आपबीती आप पर बीती =
- नगरवास नगर में वास =
- रणधीर रण में धीर =
- क्षणभंगुर =क्षण में भंगुर

- पुरुषोत्तम पुरुषों में उत्तम =
- लोकप्रिय लोक में प्रिय =
- गृहप्रवेश गृह में प्रवेश =
- युधिष्ठिर युद्ध में स्थिर =
- शोकमग्न शोक में मग्न =
- धर्मवीर धर्म में वीर =

3. कर्मधारय समास क्या होता है :- इस समास में विशेषण-विशेष्य और उपमेय-उपमान से मिलकर बनते हैं उसे कर्मधारय समास कहते हैं। पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है।

- चरणकमल कमल के समान चरण =
- नीलगगन नीला है जो गगन =
- चन्द्रमुख चन्द्र जैसा मुख =
- पीताम्बर पीत है जो अम्बर =
- महात्मा महान है जो आत्मा =
- लालमणि लाल है जो मणि =
- महादेव महान है जो देव =
- देहलता देह रूपी लता =
- नवयुवक नव है जो युवक =
- अधमरा आधा है जो मरा =
- प्राणप्रिय प्राणों से प्रिय =
- श्यामसुंदर श्याम जो सुंदर है =
- नीलकंठ नीला है जो कंठ =
- महापुरुष महान है जो पुरुष =
- नरसिंह नर में सिंह के समान =
- कनकलता कनक की सी लता =
- नीलकमल नीला है जो कमल =
- परमानन्द परम है जो आ = नंद
- सज्जन सत् है जो जन =

- कमलनयन कमल के समान नयन =

4. द्विगु समास क्या होता है :-

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक होता है और कभी-कभी दूसरा पद भी संख्यावाचक होता हुआ देखा जा सकता है।

- नवग्रह = नौ ग्रहों का समूह
- दोपहर = दो पहरों का समाहार
- त्रिवेणी = तीन वेणियों का समूह
- पंचतन्त्र = पांच तंत्रों का समूह
- त्रिलोक = तीन लोकों का समाहार
- शताब्दी = सौ अब्दों का समूह
- पंचसेरी = पांच सेरों का समूह
- सतसई = सात सौ पदों का समूह
- चौगुनी = चार गुनी
- त्रिभुज = तीन भुजाओं का समाहार
- चौमासा = चार मासों का समूह
- नवरात्र = नौ रात्रियों का समूह
- अठन्नी = आठ आनों का समूह
- सप्तऋषि = सात ऋषियों का समूह

5. द्वंद्व समास क्या होता है :-

इस समास में दोनों पद ही प्रधान होते हैं। ये दोनों पद एक-दूसरे पद के विलोम होते हैं लेकिन ये हमेशा नहीं होता है। दो पदों के बीच योजक(-) लगा होता है इसका विग्रह करने पर और, अथवा, या, एवं का प्रयोग होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

- जलवायु = जल और वायु
- अपना-पराया = अपना या पराया
- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य

- राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण
- अन्न-जल = अन्न और जल
- नर-नारी = नर और नारी
- गुण-दोष = गुण और दोष
- देश-विदेश = देश और विदेश
- अमीर-गरीब = अमीर और गरीब
- नदी-नाले = नदी और नाले
- धन-दौलत = धन और दौलत
- सुख-दुःख = सुख और दुःख
- आगे-पीछे = आगे और पीछे
- ऊँच-नीच = ऊँच और नीच
- आग-पानी = आग और पानी
- मार-पीट = मारपीट
- राजा-प्रजा = राजा और प्रजा

6. बहुब्रीहि समास क्या होता है :-

इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। जब दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हैं तब वह तीसरा पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर “वाला , है, जो, जिसका, जिसकी, जिसके, वह” आदि आते हैं वह बहुब्रीहि समास कहलाता है।

- गजानन = गज का आनन है जिसका (गणेश)
- त्रिनेत्र = तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)
- नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका (शिव)
- लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
- दशानन = दश हैं आनन जिसके (रावण)
- चतुर्भुज = चार भुजाओं वाला (विष्णु)
- पीताम्बर = पीले हैं वस्त्र जिसके (कृष्ण)
- चक्रधर = चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
- वीणापाणी = वीणा है जिसके हाथ में (सरस्वती)
- स्वेताम्बर = सफेद वस्त्रों वाली (सरस्वती)

- सुलोचना = सुंदर हैं लोचन जिसके (मेघनाद की पत्नी)
- दुरात्मा = बुरी आत्मा वाला (दुष्ट)
- घनश्याम = घन के समान है जो (श्री कृष्ण)
- मृत्युंजय = मृत्यु को जीतने वाला (शिव)
- निशाचर = निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)
- गिरिधर = गिरी को धारण करने वाला (कृष्ण)
- पंकज = पंक में जो पैदा हुआ (कमल)
- त्रिलोचन = तीन हैं लोचन जिसके (शिव)
- विषधर = विष को धारण करने वाला (सर्प)

कर्मधारय समास और बहुब्रीहि समास में अंतर :-

समास के कुछ उदाहरण हैं जो कर्मधारय और बहुब्रीहि समास दोनों में समान रूप से पाए जाते हैं, इन दोनों में अंतर होता है। कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है। इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है। कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा पहला पद विशेष्य के विशेषण का कार्य करता है। जैसे :- नीलकंठ = नीला कंठ

बहुब्रीहि समास में दो पद मिलकर तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं इसमें तीसरा पद प्रधान होता है। जैसे :- नीलकंठ = नील+कंठ अर्थात् =शिव ,मोर

द्विगु समास और बहुब्रीहि समास में अंतर :-

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जबकि बहुब्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है।

जैसे :-

- चतुर्भुज चार भुजाओं का समूह -
- चतुर्भुज चार हैं भ -ुजाएं जिसकी

द्विगु और कर्मधारय समास में अंतर :-

- (1) द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो दूसरे पद की गिनती बताता है जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है।
- (2) द्विगु का पहला पद ही विशेषण बन कर प्रयोग में आता है जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है।

जैसे :-

- नवरात्र नौ रात्रों का समूह -
- रक्तोत्पल रक्त है जो उत्पल -

